R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 23वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

शोध पत्र

www.shaharsamta.com

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विजय कुमार तिवारी पर केंद्रित विशेषांक

वर्ष 23 | अंक 22 | रविवार, इलाहाबाद, 22 अक्टूबर 2023 | पृष्ठ 8 | विशेषांक मूल्यः 5 रू0

संपादकीय

इस बार विजय कुमार तिवारी

उसने कहा, विरान सी हो गई है जिंदगी
न पत्ते, न फूल, न फल, बोझिल शामें और
उदास सुबह।

यह उदास सुबह न जाने क्यों मनुष्य को मथ देती है। पता नहीं क्यों हो जाती है, उदास सुबह। जीवन की सच्चाई को समझने के लिए, उसे परखने के लिए और उसमें खुशियों की सौगात भरने के लिए सुबह का खुशहाल होना जरूरी होता है। प्रफुल्लित मन का ताना-बाना इसी खुशहाल सुबह से ही प्रारंभ होता है फिर भी न जाने क्यों हो जाती हैं उदास सुबह।

कवि हृदय विजय कुमार तिवारी ने उदास सुबह के बहाने इस

कविता में, जिस जीवन को टटोलना की कोशिश की है, वास्तव में वही सच्चाई है, इस जीवन की। शायद इसीलिए इस कविता के अंत में कवि कह उठता है कि-

कभी-कभी बढ़कर स्वागत करना चाहिए
शायद कोई प्रतीक्षा में बैठा हो सदियों से
तुम्हारे लिए।

तुम्हारे लिए की परिकल्पना अनमोल है, रहस्य के इन परतों का लोग अपने-अपने अनुभव और अपने-अपने अध्ययन के अनुसार अर्थ निकालें तो बेहतर है।

कवि, समीक्षक, कहानीकार और उपन्यासकार विजय कुमार तिवारी का साहित्यिक फलक काफी व्यापक है फिर भी इस 8-पेजी विशेषांक में जितना हो सका है रखने का प्रयास किया जा रहा है।

बलिया में जन्मे विजय कुमार तिवारी कई शहरों से होते हुए अब भुवनेश्वर (उड़ीसा) में ही रहकर अपने साहित्य सृजन की तूलिका चला रहे हैं। समीक्षक के रूप में विजय कुमार तिवारी की पहचान धीरे-धीरे विस्तार रूप ले रही है। कवि, कहानीकार और उपन्यासकार विजय कुमार तिवारी के बारे में अधिक न कहकर बस इतना ही कहना चाहूंगा कि साहित्य के इस योद्धा पर इस विशेषांक में जो सामग्री है उसे देखें, परखें और बताएं कि यह विशेषांक आपको कैसा लगा। इस विशेषांक में जिन विद्वानों का लेख समाहित है, हम उन्हें हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। प्रतिक्रिया जरूर दें।

अंत में -

विजय तुम्हारी विजय पताका ,
दिन-दिन ही बढ़ती जाए ।
साहित्य जगत में नव विचार की ,
अमर तूलिका फैलाये ।

उमेश श्रीवास्तव

कथा विधा और मेरा समीक्षात्मक चिन्तन

प्रेमचंद ने कहीं लिखा है,मनुष्य की सबसे बड़ी लालसा है कि वह कहानी बन जाए। यह विचार तनिक जटिल ता की ओर संकेत करता है परन्तु उतना ही सहज भी है। हर युग में लोगों की भावना रहती है कि जनमानस उन्हें जाने,पहचाने और समाज में उनके कृत्यों की चर्चा हो। इसके विपरीत भी होता है,बिना कुछ किए भी लोग कहानियों में,इतिहास में दर्ज होना चाहते हैं और होते भी हैं। इसको लेकर बहुत अधिक चिन्तित होने की जरुरत नहीं है। ऐसा वक्त जरुर आता है,ऐसे लोगों को बुहार कर कूड़े में फेंक दिया जाता है और उनकी दूसरी कहानी बन जाती है। तय तो करना ही होगा,हम किस तरह लोगों की स्मृतियों में रहना चाहते हैं। इसके लिए जरुरी विमर्श यही है,हर व्यक्ति को कुछ करना होगा। कहानी व्यक्ति की तभी बनती है जब वह कुछ करता है। गहरे भाव से विचार करें तो कहानी हमारे कार्यों से बनती है,विस्तार लेती है और समाज को आईना दिखाती है।

कहानी विधा को लेकर बहुत कुछ लिखा गया है,उस पर विद्वान साहित्यकारों ने प्रकाश डाला है, चिन्तन किया है और समझने-समझाने की कोशिशें हुई हैं। साहित्य में गतिशील तत्व होते हैं और उसकी हर विधा को आगे बढ़ाते हैं। एक तरह से वह हर काल-खण्ड का इतिहास भी होता है। कहानी के क्षेत्र में लम्बे समय तक विचित्र मानसिकता बनी रही और पुरोधाओं ने अच्छी कहानी व बुरी या कमजोर कहानी के चश्मे से देखते हुए खूब उठापटक की है। इससे कहानी विधा की बड़ी क्षति हुई है और इस तरह बड़े फलक पर देखा जाए तो साहित्य की हानि हुई है। ऐसा क्यों हुआ? यह विचारणीय प्रश्न है परन्तु इस दिशा में आज भी उतना चिन्तन नहीं होता जितना होना चाहिए। दरअसल कुछ लोगों ने बेल गाम होकर बंदरबाँट किया,कुछ को श्रेष्ठ घोषित किया और शेष सभी को परे कर दिया। उन विद्वतजनों को नमन करते हुए इतना ही कहना चाहता हूँ, कहानी विधा,काव्य विधा या पूर्णता में साहित्य उतना ही नहीं है जितना उन लोगों ने स्वयं पढ़ा,समझा और अपने काल-खण्ड में लोगों को समझा दिया। जितना हुआ, उसके लिए उन सभी को नमन। गतिशीलता,प्रगति,विकास जैसी अवधारणाएं नकारी नहीं जा सकती, उनकी उपस्थिति जीवन में,समाज में और हमारे साहित्य में होती ही है। ठहराव जैसी घटनाएं प्रकृति में नहीं होती बल्कि नित्य-नूतन सृजन होता रहता है। यथार्थतः देखा जाए तो जो रुकने-रोकने की कोशिश करता है, प्रकृति की नियामक शक्तियाँ आगे बढ़ाती रहती हैं,बदलाव करती हैं और कई बार कठोरता पूर्वक विध्वंस कर देती है।

दरअसल सब कुछ मनुष्य की प्रवृत्तियों और चिन्तन से जुड़ा हुआ है। हमारा या हमारे समाज का चिन्तन जितना सारगर्भित और महत्वपूर्ण होगा,सृजन भी श्रेष्ठ होता जायेगा। इतना तो स्वीकार करना ही चाहिए,कोई भी रचनाकार कुछ लिखता है,उससे पहले,लेखन के पूर्व की सम्पूर्ण प्रक्रियाओं से गुजरता ही है।

मान लेना चाहिए कि लेखक का भीतरी,किसी घटना से,परिस्थिति से,व्यक्ति या व्यक्ति-समूहों से प्रभावित हुए बिना लिख ही नहीं सकता। आदर्श परिस्थितियों से विचलन लेखक सह नहीं सकता,उसकी कलम जय बोलने ल गती है। सारांशतः हर लेखक ऐसा चितेरा है जो संगतियों-विसंगतियों को पहचानता है और समाज को दिशा देता है।

'कहानी' की अपनी अलग पहचान है। कहानी का परिदृश्य हर तरह से विस्तृत और व्यापक है। पहले की तरह समकालीन दौर में भी दुनिया भर में कहानियाँ खूब लिखी और पढ़ी जा रही हैं। कहानी ने अपने तेवर-कलेवर में,अपनी भाव-भंगिमा में खूब विस्तार किया है। हमारा समाज जटिल है तो कहानियाँ उस जटिलता को रेखांकित करती हैं,संवेदना और भाव-प्रवणता द्वारा श्रेष्ठ का वरण करती हैं। साहित्य समाज का आईना है तो अन्य विधाओं की तरह कहानी विधा उस आईना का मोहक और साफ-सुथरा स्वरुप है।

कहीं पढ़ने को मिला,आशय यही था कि नामचीन आलोचक जिन कृतियों को महान और बड़ा

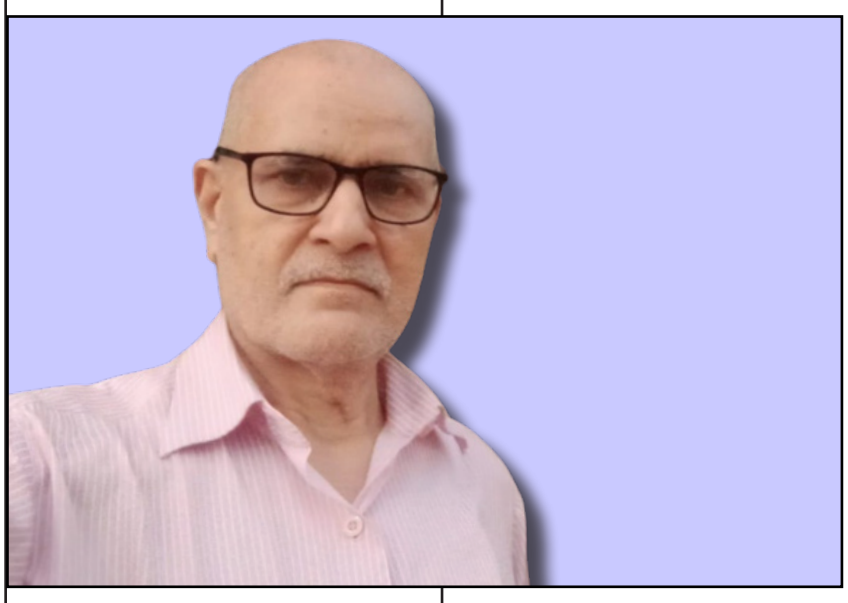

सिद्ध कर देते हैं,पाठक उन्हें परे कर देता है। यह चिन्तन का विषय होना चाहिए, कहाँ समस्या है-लेखक के लेखन में,पाठकों में या आलोचना, समीक्षा में। लेखक अपने अनुभूत संसार को अपनी संवेदना के साथ लिखता है और जितना उसका अनुभव है,वैसा ही उसका लेखन उभर कर आता है। पाठक को वही लेखन आकर्षित करता है जहाँ उसकी पीड़ा,संघर्ष या अनुभूतियाँ चित्रित हुई दिखाई देती हैं। यह मूल चिन्तन है लेखन-पठन का। साहित्य लेखन में कला पक्ष भी है,अलंकार, रस हैं और अनुभूतियों का मानवीकरण भी। इसमें भिन्नता का होना संभव है क्योंकि कोई भी पूर्ण परिपक्व नहीं होता,इधर दृष्टि गई तो उधर छूट गया,एक भाव मजबूती से पकड़ा तो दूसरा भाव कमजोर रह गया। आल ोचना,समीक्षा में इसका उल्लेख किया जा सकता है परन्तु सीधे लेखन को खारिज कर देना किसी भी तरह उचित नहीं है। जितना है,कम से कम उतना भर का सम्मान,श्रेय लेखक को मिलना ही चाहिए। समीक्षक,आलोचक के अधीन नहीं है किसी कृति को महान या कमतर घोषित करना,यह अधिकार पाठकों के पास है,इसलिए ऐसे प्रयास हमेशा हँसी के पात्र होते हैं। समीक्षाएं हमेशा रचना आधारित होती हैं,ऐसे में समीक्षक के पास बहुत कुछ कहने के लिए नहीं होता। उसे वही कहना है जो रचना में है।

हिन्दी कथा साहित्य पर चर्चा के क्रम में बहुत सी बातें हो रही हैं। साहित्यिक लेखकों, विचारकों, चिन्तकों और समाज के पुरोधाओं की जिम्मेदारी हमेशा रही है और सबने यथासंभव, यथासाध्य निर्वहन करने का प्रयास किया है। आज के सघन संक्रमण-काल में अपेक्षाएं बहुत बढ़ गयी हैं। ऐसा नहीं है कि सम्बन्धित लोग सजग,जागरूक नहीं हैं और दायित्व निभाना छोड़ दिया है। समाज का विकास इन्हीं संघर्षों,टकरावों और बेहतर की तलाश से होता है। गड़बड़ी तब होती है, जब व्यक्ति-केन्द्रित सोच को बढ़ावा मिलने लगता है। ऐसे में समाज,देश और उसके साहित्य की प्रगति प्रभावित होने लगती है। हालांकि सिद्धान्तों में,पुस्तकों में,शास्त्रों और संविधान में तत्सम्बन्धी सम्पूर्ण सर्वसम्मत विचार सुरक्षित रहते हैं। उनकी आवश्यकता और लागू किये जाने की अनिवार्यता पर कहीं कोई असहमति नहीं होती। हर काल-खण्ड में प्रश्न उठते हैं,उनके उत्तर खोजे जाते हैं और समाज की दशा-दिशा तय करने वाली नियामक शक्तियाँ उन्हें स्वीकार करती हैं। समस्या ज्यों की त्यों बनी रहती है,सारे प्राप्त निष्कर्ष लागू नहीं होते। वैचारिक जटिलताएं इतनी हैं कि सम्यक निराकरण सुनिश्चित कर पाना सहज नहीं होता। हास्यास्पद ही है,हम व्यक्ति,समाज और देश-हित की चिन्ता करते हुए धीरे-धीरे एक-दूसरे के सामने खड़ा हो जाते हैं। विकास तो अवरूद्ध होता ही है,सम्पूर्ण ऊर्जा और शक्ति का क्षय होता है।

साहित्य की धड़कन लोग महसूस करते हैं। कोई सृजन करता है,कोई पढ़ता है,कोई चिन्तन करता है और कोई विवेचना,व्याख्या करता है। सभी अपने-अपने तरीके से प्रश्न खड़ा करते हैं,अपने-अपने तरीके से समाधान भी करते हैं। जो उत्तर नहीं ढूँढ़ पाते,उनका भी साहित्य में सहयोग है क्योंकि साहित्य उनके लिए भी है। साहित्य में मानवता और मनुष्य की बातें होती हैं,उनकी भी बातें होती हैं या होनी चाहिए जिनके लिए हमारी संवेदना जाग उठती है। हर रचनाकार स्वयं की अनुभूतियों को अभिव्यक्त करता है या करना चाहता है,इसके लिए विधाओं के सन्दर्भ में चिन्तन

...शेष पृष्ठ 7 पर

कवि की कलम से

विजय कुमार तिवारी की कविताएं

यह प्रेम ही तो है

मेरे तप्त मन को,व्यथित हृदय को
शान्ति की अनुभूति होती है,
वह तुम्हारा प्रेम ही तो है।
जब-जब मनोनुकूल नहीं होता
या पीड़ित होता हूँ
अपनों के दंश से,
तुमने ही बार-बार रोका है मुझे,
सम्हाला है,सहारा दिया है।
तुमने ही सिखाया है विष पीने की कला,
जीवन जी लेना, विष पीने से कम तो नहीं,
तुमने ही पहचान करवा दी है
अपनों की,परायों की।
मुक्ति नहीं चाहता,चाहता हूँ
तुम रहो मेरे साथ,
ऐसे ही सहलाते,सम्हालते,
ऐसे ही हँसते,मुस्कराते।
भूल जाता हूँ अपनी पीड़ा,अपना दर्द
भूल जाता हूँ दुनिया भर की
यन्त्रणा,क्षोभ और दुख।
समझने लगा हूँ,सारे सम्बन्ध,
रिश्ते-नाते ऐसे ही हैं
सब के सब दोष देखते हैं,
दोषी मानते हैं मुझे।
अपनी असफलताओं के लिए,
असुविधाओं के लिए
मुझसे उत्तर चाहते हैं,
कटघरे में खड़ा करते हैं
तिल-तिल मारना चाहते हैं,
अपने हों या पराये।
मरना मैं नहीं चाहता,मृत्यु के पहले,
जीना चाहता हूँ तुम्हारे साथ,
तुम्हारी उपस्थिति की
अनुभूतियों के साथ,हे ईश्वर!
तुम्हारा प्रेम महसूस करता हूँ।
हर बार समेट लेते हो तुम
अपने आगोश में,अपनी करुणा-कृपा में।
मेरी प्राण-चेतना जगा देते हो,
स्पन्दित हो,हृदय धड़कने लगता है
यह तुम्हारा प्रेम ही तो है,
महसूसता रहता हूँ-तुम्हारा ऐश्वर्य,
तुम्हारा सौन्दर्य,तुम्हारा सम्पूर्ण आनन्द।

प्यार की बस्तियाँ

दौर तो कोई भी सहज नहीं होता
कभी भी,कुछ भी आसानी से नहीं मिलता
मुफ्त का पाने के लिए भी
करनी पड़ती है तिकड़में।
तिल-तिल मारना पड़ता है स्वयं को
सीखनी पड़ती है कला, दबाए रखने की-
अपना पुरुषार्थ,
अपना हुनर और जोश-उत्साह,
फिर सीखनी पड़ती है कला,
मुँह ताकने की,मांगने की।
दुनिया के सारे कवि जानते हैं
इसका रहस्य,
तुम भी अनजाने नहीं हो,
जानते हो सब कुछ।
वह उतना ही देता है कि जीवित रह सको,
और बने रहो ऐसे ही लाचार,बीमार।
कोई तुम्हें काम नहीं देता
चाहे पक्ष हो या विपक्ष
कोई तुम्हें श्रेष्ठ जीवन की
तरकीब नहीं बताता।
तुम भी तो नहीं चाहते अपना पौरुष जगाना,
मुफ्त नहीं, कुछ करके रोटी खाना।
विनाश के लिए तो रोज खड़ा होते हो,
कभी अपने लिए खड़ा हो जाओ,
कुछ करने के लिए निर्माण या सृजन
और बसाने के लिए प्यार की बस्तियाँ।

मेरा कुनबा

जिस मोड़ पर खड़ा हूँ
सामने के खेतों की फसलें काटी जा चुकी हैं
कट चुके हैं मेरे भी जीवन के अनेकों साल,
खेतों में किसान तैयारी करेंगे
नई फसलों की।
मुझे भी तो कुछ करना चाहिए नये सिरे से
कम से कम मुस्करा तो सकता ही हूँ
उन स्मृतियों के सहारे
कि ऐसे ही चलता रहता है
जीवन में उतार-चढ़ाव।
हलरा-दुलरा सकता हूँ
घर-परिवार के बच्चों को
या निराश लोगों के मन में
उम्मीद जगा सकता हूँ
कि यह दुनिया उतनी बुरी नहीं है,
बल्कि पुरजोर दलीलों से बता सकता हूँ
कि कोशिशें करो,फिर से
फसल लहलहायेगी,
फिर से फूल खिलेंगे और
मौसम फिर से सुहाना होगा।
उपयोगी बनाए रखना होगा स्वयं को
कुछ न कुछ करते रहना होगा
ताकि होता रहे अहसास कि जीवित हूँ मैं
और मेरे होने से सुरक्षित है मेरा कुनबा।

बदलने का दौर

बदलने का दौर है,
धरती,आकाश,मौसम,नदी-पहाड़
हमारा मन-चिन्तन सब बदल रहे हैं,
बदल रही है मिट्टी और हरियाली।
मलय बयार नहीं कि
मिलती रही चैन की नींद
इसमें तपिश भी है,
शीतलता और कोई नई चेतना।
तुम्हारे सारे गढ़े हुए शब्द,
खो चुके हैं अपना अर्थ
गिर रहे हैं,ढह रहे हैं
और खाली हो रही है भूमि,
तुम्हारे सारे आवरण खुल चुके हैं।
उठ रही है कोई जीवन्त भाषा,कोई शैली
पुरानी सारी परिभाषाएं ले रही हैं
नया आकार।
हड़पने,दबाने का खेल
खेलने वाले नहीं जानते
कोई अन्तर्धारा बहती रहती है,
हमारी धमनियों में,
धरती के भीतर कठोर चट्टानों के नीचे
हमारी सभ्यता-संस्कृति को थामे हुए।
बीच का अंतराल किसी स्वप्न की तरह था,
ताकत और तलवारों पर आश्रित
बार-बार रौंदी गई है धरती,
यहाँ के बाग-बगीचे
यहाँ के बच्चे,यहाँ की स्त्रियाँ
बार-बार किया है आक्रमण आक्रान्ताओं ने।
टुकड़े-टुकड़े में बँटे हैं तुम्हारे अवशेष,
ले रहे हैं अंतिम सांसे,
गिन रहे हैं अंतिम दिन,
मानवता के लिए जीते,
मानवता के साथ
तो नहीं आते ऐसे दुर्दिन
हमारे-तुम्हारे जीवन में।

कविता, आदमी और युद्ध

1
इस कविता में मैं हूँ भी
और नहीं भी
वैसे ही जैसे वायु मण्डल में हवा
बादलों में पानी या बर्फ की कोई चादर
हूँ इसीलिए तो यह कविता है
नहीं होने का तो कोई सवाल ही नहीं है
2
हमारे होने से बहुत कुछ है
जैसे सुबह का होना,सूरज का उगना
चाँद का चाँदनी बिखेरना या चिड़ियों का
गायन
हमारे होने से दुनिया रोशन है,क्योंकि
भीतर आग है और पानी भी
संस्कृति और सभ्यता भी
3
जब भी लगता है
धरती अधिक गर्म हो रही है
हवा आँधियों की शक्ल ले रही है
मौसम डराना चाहता है
या फैलने वाली है कोई महामारी
सबसे पहले बेचैन होते हैं जीव-जन्तु
चिड़िया उड़ान भरती है किसी बेचैनी में
पशु भी होने लगते है बेचैन
4
सबसे बाद में जागता है मनुष्य
जम्हाई लेता है,खाँसता-खँखारता है
उसका नहीं टूटता आलस, नहीं टूटती तन्द्रा
सहसा विश्वास ही नहीं होता
वही आदमी खड़ा होता है,ऊर्जा समेटता है
देर नहीं लगती चुनौती समझने में
रणनीति भी तेजी से बनाता है और कूद
पड़ता है युद्धभूमि में
5
आदिम काल से लड़ता आया है यह युद्ध
दुश्मनों को पहचानता है और मित्रों को भी
पहचान गया है अपनी भीतरी ताकत
धरती,आकाश,जल,अग्नि और हवा
उसने साध लिया है सबको
सर्वत्र फैल गया है,हमारी ऋचाओं में
और हमारी कविताओं में भी

धुंध

आजकल धुंध बहुत है,
मौसम में और जीवन में भी,
सूरज निकल आए,
धुंध खत्म हो जाता है मौसम का
सोचता रहता हूँ जीवन में
व्याप्त धुंध को लेकर
लोग सलाह देते है,हँसते है,
कोई तरकीब नहीं बताते
जान जाता हूँ,सब के सब धुंध में है,
और सच्चाई को शायद जानते भी नहीं

प्रेम की कविताएं

आजकल खूब लिखी जा रही हैं,
प्रेम की कविताएं
छप रही हैं प्रेम की कविताएं अखबारों

में,पत्रिकाओं में
घरों में खूँटियों पर टंगी हैं
प्रेम की कविताएं,
दीवारों पर लटकी हैं
चाहो तो देख लो खिड़कियों से
झाँककर या बालकनी से
छिपाई नहीं जा रहीं
प्रेम की कविताएं
प्रेम की कविताएं अँगड़ाई ले रही हैं
किसी नवयौवना-सी
आँखों में उभर आई हैं
स्मृतियाँ,होंठों पर फैल रही है
पावन मुस्कान
चालीस पार सांस ले रही
किसी प्रौढ़ा की धड़कने
गरम सांसे,लम्बा उच्छवास,
कौंध गयी है कोई मधुर याद
उम्रदराज नाती-पोतियों वाली दादी के सीने में
प्रेम की कविताएं उजास फैला रही हैं,
खेत-खलिहान,द्वार-आँगन
हमेशा जोश में रहता है मौसम,
प्रेम की कविताओं के साथ
चमकती रहती है आँखें प्रेमियों की,
प्रेम की टीस के साथ
सरसों के पीले फूल लिए सज जाते हैं खेत
झूम उठते हैं धरती-आसमान
प्रेम की चादर ताने
खूबसूरत अहसास देती हैं
प्रेम की कविताएं
प्रेम में सम्पूर्ण सृष्टि सुख,
आनंद में होती है और दुनिया निराली
दुखद है-क्यों नहीं लिखते
सब लोग प्रेम कविताएं
प्रेम कविताएं बहुत लोग
पढना भी नहीं चाहते।

सदियों से प्रतीक्षा

उसने कहा,वीरान-सी हो गयी है जिन्दगी,
न पत्ते,न फूल,न फल,
बोझिल शामें और उदास सुबह
मैंने कहा,देखो भीतर
कोई नदी ठहर सी गयी होगी प्रेम की
रुक सा गया होगा
भोर-भोर का सिन्दूरी सूरज
देखो तुमने खुद
बंद कर ली होगी सारी खिड़कियाँ
कोई चल कर आता होगा,
लौट जाता होगा बंद दरवाजे से
उसने बारहा आवाज लगाई होगी,
गुहार के साथ
देख लो,तुम्हारी ही बेरुखी ने बंद किया
होगा मुस्कराने के रास्ते
तुमने ही भगाया होगा प्रेम के सारे
मनुहार,समय रहते
देख लो बाहर झाँककर,
शायद कोई अब भी कर रहा हो
प्रतीक्षा तुम्हारे आने की
देख लो,कोई ऐसे ही पड़ा हो
पत्थरों के बीच, पत्थर-सा
बाहर देखो,किसी की
सांसें अटकी पड़ी हो,
तुम्हारी एक नजर के लिए
तुम्हारी छुअन,शायद अब भी
जिन्दा कर दे सारी उम्मीदें
तुम्हारी मुस्कराहटें अब भी
रोशन कर दे किसी का अंधेरा
कभी-कभी पहल करना चाहिए,
प्रतीक्षा करने के बजाए
कभी-कभी बढ़कर स्वागत करना चाहिए
शायद कोई प्रतीक्षा में बैठा हो
सदियों से तुम्हारे लिए

सुबह का सूरज

उसने 'सुप्रभात' कहा
और भेज दिया उगता हुआ
लाल सूरज का गोला
नीचे नदी का प्रवाह था
और सूरज झिलमिला उठा
हवा थोड़ी शीतल,सहला गई मुझे
लगा,उसने ही छुआ है अपनी पूरी
सात्विकता के साथ
मेरा सम्पूर्ण सौन्दर्य
उभर आया था उसकी आँखों में
मेरा सम्पूर्ण अस्तित्व उसकी भुजाओं में
मैं थी ही नहीं,कहीं भी उस वक्त
वहाँ सूरज था,हरियाली थी
और पूरी प्रकृति
हाँ,वही फैला हुआ था,
धरती से आसमान तक
मेरे मन में,आँखों में
और नदी के चारों ओर।

मुश्किल के बावजूद

मुश्किल है ना?
बहुत कठिन है पहचान पाना
कौन सही कह रहा है,कौन गलत?
आँख रहते लगता है अंधा हूँ मैं
कान रहते बहरा और मुँह रहते गूँगा
चारों ओर शोर है,
सभी सच का दावा कर रहे हैं,
सभी अपनी-अपनी सीमा में
दुनिया बना रहे हैं,
अपने-अपने हिसाब से सजा-संवार रहे हैं,
कोई हजार पंद्रह सौ वर्षों को ही सच
मनवाना चाहता है
बर्बरता से मिटा देना चाहता
उसके पहले का सब कुछ,
जो दूर,बहुत पीछे को जोड़ते हैं
अपने जीवन में
सभ्यता-संस्कार जन्म ले चुका है उनमें
सीख गये हैं करुणा,
दया और प्रेम की भाषा
पूरे देश में,विश्व में पसरा है उनका आलोक
विध्वंस के बाद भी चमकते खड़े हैं
उनके देवी-देवता
मनुष्य के बस में नहीं उन्हें नष्ट करना
सूर्य को,चाँद-तारों,दिशाओं को देवता कहा है
नदी,पहाड़,पेड़-पौधे सभी पूजे जाते हैं
सबको पता है,
ये नष्ट हो गये तो नहीं बचेगी सृष्टि
कोई नहीं बचेगा तब,
चाहे इधर का या उधर का
विधान तो एक ही चलेगा,गलत को
दण्ड,सच को पुरस्कार
सारे झंझावातों के बावजूद
बचे रह जायेंगे कोमल पौधे
नरम दिल लोग और करुणा,
प्रेम से भरी आँखें।

पिता और पेड़

हम परिचित हैं अपने-अपने पिता से
जानते हैं अपनी मां को,
बहनों और भाइयों को
वैसे ही पेड़ को जानना होगा,
हरियाली और शीतल हवा को भी
जीवन शून्य है यदि हम फूलों को नहीं जानते
नहीं जानते चिड़ियों को,गिलहरियों को
हम कुछ भी नहीं हैं,
यदि नहीं जानते मिट्टी की गंध
नहीं जानते नदी का अविरल प्रवाह,
समुद्र की हलचल
हमें जानना होगा,
किस आलोक में बिहँसता रहता है
नन्हा सा शिशु
मां की कौन सी छुअन
उसे सुख से भर देती है
किस तरह तृप्त कर देती है
उसे मां की गोद
वैसे ही पौधे पहचानते हैं,
पेड़ और फूलों की पंखुड़ियाँ
कौन तोड़ने,काटने आया है
और कौन सींचने,बचाने
पौधे पहचान जाते हैं
तुम्हारी करुणा और संवेदना
वे खूब पहचानते हैं
तुम्हारे चेहरे की मुस्कराहट,
तुम्हारा प्यार
आज भी मेरे सपने में आते हैं,
फूल,पौधे और पेड़
बेचैनी में आज भी महसूसता हूँ
उनकी खुशबू और छायाएं
उनकी उपस्थिति तरोताजा कर देती है
आज भी उमगता,
किलकता रहता हूँ
बच्चे की तरह उनके साथ।

स्वयं को बदलना

चलो,कोशिश करते हैं,
दुनिया को बदलने की,
शुरुआत करते हैं,
अपने को बदल कर,
सबसे सरल है
स्वयं को बदलना।
धरती बदलती है
तो निकलते हैं अंकुर,
पेड़-पौधे बदलते हैं तो
निकल आती हैं कोंपलें,
मन बदलता है तो जागता है
आलोक और प्रेम।
दुनिया उतनी बुरी नहीं है,
जैसा समझते हैं लोग,
वीभत्स होने लगते हैं,
संसार के सारे विमर्श,
घटित होने लगता है विनाश,
प्रतिक्रिया के रुप में।
चलो कुछ पेड़ लगायें,पुचकार दें,
आसपास के बच्चों को,
बना लें इस तरह कि पास आ जायें
तोते और गिलहरियाँ,
बेधड़क,बिना सहमे
गुजर जायें मुस्कराती जवान लड़कियाँ।

दुखराग

उस नन्ही सी बच्ची को देखो,
खुश है कि कोई देख रहा है उसे,
सहला,पुचकार रहा है,खेल रहा है उसके
साथ।
बस,इतना ही करना है,
सब इतना ही चाहते हैं,
यह आकाश सबका है,
धरती और सारी रश्मियाँ,
सारी वनस्पतियाँ और सारी मानवता।
कोई उदास निहारता रहता है,
अपनी पनीली आँखों से,
देख तो लो उसकी ओर मुस्कराकर,
शायद वह भी मुस्कराये,
निकल तो आयेगा ही
अपनी उहापोह से,
अपने जज्बातों और दुखों से।
हो सके तो बैठो उसके पास,
ठंडापन दूर हो जायेगा,
दुनिया उसे,उम्मीदों भरी नजर आयेगी,
शायद वह भी दे सके कोई सीख,
कोई ज्ञान।
उसके दुखराग को कविता समझो,
कोई बहुत जरूरी कहानी
उसकी आँखों में झाँको,
बहुत समानता दिखाई देगी,
मैं हमेशा हैरान होता हूँ,
कितना कुछ पा जाता हूँ,
तनिक पास बैठकर,
मुस्कराकर या उनकी आँखों में झाँककर।

दुनिया और ईश्वर

दुनिया खूबसूरत थी,
है और रहेगी,
ईश्वर ने सौंपी है
हमें सुन्दर और लाजवाब दुनिया,
सब कुछ सहज है,
सुन्दर और हम सबके अनुकूल।
कुछ लोग बददिमाग थे,
हैं और रहेंगे,
पहले भी उजाड़ी है दुनिया,
आज भी लगे हैं,
तब भी बची रह गयी
दुनिया,आज भी बचेगी।
तय तो उन्हें ही करना है,
अपने सुख-चैन के बारे में,
शान्ति के बारे में,
अपने जीवन और मृत्यु के बारे में,
अपयश और अपराध-बोध की
बेचैनी दण्ड ही तो है।
खोया है मन का चैन,कुकर्म करने के बाद,
देश और समाज के कानून से
बच नहीं सकते,
बच नहीं सकते ईश्वर की
व्यवस्था और विधान से।

मानव सम्बन्ध

कुछ हुआ है आज,
जैसे घटित होता है कोई उल्लास,
जैसे किसी नवजात
शिशु के चेहरे पर उभरती है मुस्कान,
मां निहारती है,खुश होती है,
भूल जाती है अपनी पीड़ा।
मैं खुश हूँ,उसने पूछा है
हम दोनों पति-पत्नी का हालचाल,
लम्बी बातें हुई हैं हमारे बीच,
शालीन और स्नेह भरी।
कोरोना के पहले मिला करते थे,
सुबह-शाम टहलते हुए,
हम पति-पत्नी तेज चाल चलते,
वह दौड़ लगाती।
आकर बैठ जाती हम दोनों के साथ,
उल्लसित,थोड़ी थकी हुई,
फिर बातें होतीं उसके घर की,मेरे घर की,
उसके जीवन की,हमारे जीवन की।
अच्छा लगा उसका पूछना,
हमारे स्वास्थ्य की चिन्ता करना,
अच्छा लगा उसका हँसना,
खुश होकर सारी बातें बताना।
बहू है वह,भले ही
खून का रिश्ता नहीं है
और न जाति-धर्म,
हृदय से आशीर्वाद है,
बना रहे ऐसे ही
सबके साथ मानव सम्बन्ध।

विजय कुमार तिवारी की एक कहानी

कोई दस्तक हुई

'जीवन आलोकमय हो, मधुरता हो, प्रेम की फुहार हो और हमारा सब कुछ दूसरों के लिए समर्पित हो, हे ईश्वर! कुछ ऐसी ही कृपा करना,' विशम्भर बाबू इन्हीं भावनाओं के साथ जीवन जीते हैं। जब से थोड़ी समझ हुई, संसार के रहस्य को जाना, त्याग पूर्वक जीना शुरु कर दिया। ईश्वर भी समान वृत्ति, सोच-विचार वालों को मिला देता है। वे अक्सर कहते हैं, 'अपना विचार शुद्ध रखो, दुनिया बहुत खूबसूरत है और ईश्वर सब सुलभ करवाता रहता है। इस संसार में सबको प्रेम चाहिए, सभी प्रेम के लिए तड़पते रहते हैं परन्तु कोई प्रेम देना नहीं चाहता।' उन्होंने अनुभव किया है, 'प्रेम चाहिए तो दुनिया से, लोगों से, जीव-जन्तुओं से प्रेम करना शुरु कर दो, तुम्हारा किया हुआ प्रेम हजार गुना होकर तुम्हारे पास लौट आता है और आप निहाल हो जाते हो।' उनके विश्वास पर ईश्वर मुहर लगा देता है। रमा वैसी ही है जैसा विशम्भर बाबू सोचते हैं, बातचीत में, हँसने, खुश होने में, रुप-रंग सौन्दर्य में, व्यवहार में और सबसे महत्वपूर्ण प्रेम करने में। रमा प्रेम करती है। वह सबको प्रेम करती है। उसके प्रेम के दायरे में अपने स्वजन-परिजन तो हैं ही, आसपास के परिवार, दूर-दराज के रिश्तेदार सभी हैं। उसका प्रेम का अपना चिन्तन है और बड़ी साफ-सुथरी सोच है, इसलिए खूब हँसती है, खुश होती है। उसका आदर-प्रेम पाने वालों में विशम्भर महाशय सरीखे लोग भी हैं जिनके प्रति श्रद्धा भाव रखती है। विशम्भर बाबू खुश होते हैं और अपना स्नेह बरसाते रहते हैं। विशम्भर और रमा दोनों का मानना है कि यह दुनिया स्वार्थों के चलते जुड़ी हुई है और एक-दूसरे का शोषण करती है। दोनों चाहते हैं कि लोग स्वार्थ से ऊपर उठें, सबके साथ सद्भावना रखें, एक-दूसरे का हर तरह से सहयोग करें और खूब प्रेम करें। उन्होंने मनुष्य के पूरे जीवन को बहुत करीब से देखा है।

अधिकांश लोगों के साथ ऐसा ही होता है। बच्चा जन्म लेता है, प्यार से पाला-पोसा जाता है। थोड़ा बड़ा होता है, पढ़ता-लिखता है, खेलता-कूदता है, थोड़ी शरारतें करता है। थोड़ा और बड़ा होता है, जवानी चढ़ती है, आँखें अपना काम शुरु करती हैं, दुनिया को नये सिरे से देखता है, उसे तलाश शुरु होती है और उसका मन किसी को खोजता है। यह खोजना साधारण नहीं होता, उसका पूरा अस्तित्व दाँव पर लगा होता है, जीवन-मरण का प्रश्न होता है। वह बेचैन होता है क्योंकि भीतर पल रही सौन्दर्यानुभूति बाहर की दुनिया में दिखती नहीं। मात्रा, व्यवहार, भाव, प्रकटीकरण और उपलब्धता कुछ भी वैसा नहीं मिलता जैसी चाह होती है। अतृप्ति उसे व्यथित करती है, जो देना चाहता है, दे नहीं पाता, जो पाना चाहता है, नहीं मिलता। गुहार लगाता है, प्रश्न पूछता है, उत्तर चाहता है, कुछ भी मनोनुकूल नहीं होता। उसकी बेचैनी विक्षिप्तता का रुप लेने लगती है, पागल दुनिया उसकी बेचैनी नहीं समझती, समझती भी है तो साथ नहीं देती क्योंकि वह पुरुष है, घर का मुखिया है, पिता है, किसी का पति है और सबके लिए चिन्ता करना उसकी जिम्मेदारी है। सब उसकी ओर देखते हैं, अपनी-अपनी मांगें रखते हैं, अपना हक व अधिकार चाहते हैं। वह किससे मांगे, किसको पुकारे? मौन हो जाता है। यह दुनिया उसे भी नहीं समझती, साथ नहीं देती क्योंकि वह स्त्री है, पत्नी है, मां है और घर के साथ-साथ सबके प्रति उसकी जिम्मेदारी है। उसकी भी वही दशा है, उसके प्रति किसी की जिम्मेदारी नहीं है, कोई उसके लिए चिन्ता नहीं करता। वह किससे मांगे? किसे अपने मन का सुनाये? किसे बताए अपने भाव, विचार और उलझनें? वह भी मौन हो जाती है।

मौन होना सहज है क्या? भीतर-भीतर चीत्कार उठती है, वह रो भी नहीं सकता। रोता है तो दुनिया कायर समझती है, उसपर हँसती है, उसकी व्यथा पर हास्य होता है। उसका दुख कोई सुनना नहीं चाहता, उसके अपने भी नहीं सुनते जिनके लिए उसने अपना जीवन खपा दिया है। दुख सुनना तो दूर, सबको उससे शिकायतें हैं, उसने हर किसी को कम दिया है बल्कि हर किसी को दुखी किया हैं। नाना शिकायतें हैं उससे, कभी दबी जबान, कभी खुलकर विरोध है उससे। सबको याद है, कब-कब उसने जरुरत भर पैसे नहीं दिए, कब-कब डांट पिलाई, कब-कब अनसुना किया और हमेशा अपने मन का किया। वह अपनों की आँखों को पढ़ता है, कहीं भी सहयोग, सद्भाव नहीं दिखता। सबसे दुःसह स्थिति है, अब उसका होना बोझ की तरह है, उसका बोलना गैरजरूरी, उसका पीड़ा में तड़पना घर की शांति भंग करती है, लोगों की नींद पूरी नहीं होती। साथ बैठना तो दूर, सब बच कर निकलते हैं, आये हुए लोगों से कहते हैं, 'जीना मुश्किल कर दिया है, दवा-दारु का खर्च कंगाल कर रहा है और घर का वातावरण दूषित हो गया है।'

रमा की स्थिति किंचित भिन्न है, अभी उसकी जिम्मेदारियाँ पूरी नहीं हुई हैं, संघर्ष के दिन हैं और उसे फुरसत नहीं है। वह दुखी नहीं है क्योंकि मौन है। दुखी नहीं है क्योंकि उसने मार्ग खोज लिया है, ईश्वर से और समान विचार वाले लोगों से स्वयं को जोड़ लिया है। विशम्भर बाबू विह्वल हो रहे हैं और चिन्तन में उलझे हुए हैं। यह उनका दार्शनिक पक्ष है, सब समझते-जानते है, उन्होंने दुनिया देखी है, यह दुनिया ऐसी ही है। उन्हें किसी से कोई शिकायत नहीं है। शिकायत रमा को भी नहीं है। दोनों संतोष कर लेते हैं, जो दुनिया के साथ होता है, वही उनके साथ हो रहा है। स्मृतियों की खिड़कियाँ, दरवाजे खुलते हैं, नाना दृश्य उभरते हैं, सुख कम, दुख की ज्वालाएं जलाने लगती हैं। ईश्वर को मन ही मन पुकारते है जब अपनों की बेरुखी सहन नहीं होती, हालांकि वे संसार में माया के खेल और उसके रहस्य को समझते हैं और स्वयं को कुछ इस तरह व्यवस्थित कर लेना चाहते हैं कि आवश्यकताएं कम हों, लोगों द्वारा सेवा की कम जरुरत पड़े। उनकी सीमित मित्र मंडली है जिनके साथ कुछ समय गुजर जाता है, थोड़ी देर बाहर जाकर टहलते हैं।

बचपन की सीख को शिरोधार्य किया है-सौ दवा न एक परहेज। यह संसार रोग का घर है। रोग न हो इसके लिए परहेज करना चाहिए। साथ वाले मित्र भी समझ गये हैं। अपने-अपने तरीके से सब परहेज करते हैं। उनकी बातों में संसार का अनुभव है, अनुभव की सच्चाई है। जो कहते हैं, सच कहते हैं। उनका मानना है, यदि सच को स्वीकार करना सीख लिया जाए तो जीवन सरल हो जायेगा। इसलिए वे सच समझना और लोगों को समझाना चाहते हैं। संसार की स्थिति थोड़ी भिन्न है, कोई सच सुनना नहीं चाहता, इसलिए उनके यहाँ भीड़ नहीं है। बाहर भी खाली, भीतर भी खाली। भीतर-बाहर खाली हो जाना सहज नहीं है, साधना करनी पड़ती है। उन्होंने खाली होना सीख लिया है और खाली होने लगे है। विशम्भर बाबू को आश्चर्य होता है, इतनी बड़ी दुनिया में कोई एक भी नहीं है जो समान सोच का हो, उसके और मेरे विचार मिलते हों या समान चिन्तन हो। विशम्भर बाबू काम की बात कहते हैं, यह दुनिया तुम्हें अलग कर दे, उससे पहले तुम स्वयं उससे उदासीन हो जाओ, तुम्हें कोई छोड़े, उससे पहले तुम्हीं छोड़ दो। मित्र कहते हैं, यह सहज है क्या? विशम्भर बाबू हँसते हैं, सहज तो बहुत है, तुम्हारा मन कमजोर है इसलिए कठिन लगता है, तुम आत्मबल, आत्मविश्वास खो देते हो, इसलिए कठिन लगता है और तुम्हें भोगना है, इसलिए कठिन लगता है। उन्होंने घर भी विचित्र तरीके से बनवाया है। दो कमरे पीछे की ओर हैं जो भीतर से जुड़े तो हैं परन्तु वह दरवाजा कभी नहीं खुलता। बगल से होते हुए पीछे जाया जाता है। उन कमरों में पहले से ही अपने एकाकी निवास के लिए तैयारी कर रखी है। सेवा-मुक्ति के दिन उन्होंने उन कमरों में प्रवेश किया और आत्मनिर्भर भाव से जीने की शुरुआत की। भीतर से संकल्पित व्यक्ति साहसी और मजबूत होता है।

विशम्भर बाबू मजबूत व्यक्ति हैं क्योंकि संकल्पित हैं परन्तु भीतर से द्रवित हैं, करुणा से भरे हैं और दुनिया को देना चाहते हैं। यह भी एक समस्या है, पूरी दुनिया पाना चाहती है। पाने के लिए नैतिक-अनैतिक कुछ भी करती है। उन्होंने देने की कला सीख ली है। अक्सर कहते रहते हैं, जिस वस्तु के बिना काम चल जाए, उसे त्यागना शुरु कर दो।

विशम्भर बाबू ने अपनी दिनचर्या में बदलाव किया है और अपनी आवश्यकताओं को कम किया है। गहरी छानबीन शुरु कर दी है कि ऐसा क्या-क्या हो कि खुश रह सकूँ। उन्होंने अपने स्वभाव और विचारों की पड़ताल की। जो-जो गड़बड़ी लगी, उन्हें दूर करने का संकल्प लिया और प्रयास करने लगे। उन्होंने अपनी ओर से परिजन, पुत्र, बहू, पत्नी या किसी को आदेश देना बंद कर दिया। सबको छूट थी, जिसे जो पूछना या सूचित करना हो, कभी भी पूछ सकता है। जब तक स्वस्थ हूँ, अपनी सारी जिम्मेदारी स्वयं उठाऊँगा। घर के सभी लोग स्वतंत्र हैं अपना निर्णय लेने के लिए। आपातकालीन परिस्थितियों में हमें एक-दूसरे को देखना या चिन्ता करनी चाहिए। मुझे कोई भी अपने ऊपर बोझ न समझे।

कुछ दिनों तक सबको थोड़ा अटपटा सा लगा परन्तु धीरे-धीरे सब ने राहत की सांस ली। सेवा-निवृत्ति और चौबीस घंटा साथ रहने को लेकर तनिक उलझन थी, विशम्भर बाबू ने एक झटके में सब कुछ बदल डाला। इसका सुफल हुआ कि उनके प्रति सब के मन में श्रद्धा जाग उठी। उनकी भोजन आदि की समुचित व्यवस्था स्वतः हो गयी। उन्होंने अपने लिए अलग से अखबार, पुस्तकें, छोटा सा टीवी, लैपटाप व मोबाइल ले लिया और सामाजिक मीडिया की दुनिया में स्वयं को रमा लिया।

प्रातः उठकर योगा-प्राणायाम करना, टहलना, मित्रों के साथ घुमना-फिरना और सब के लिए चाय बना लेना उनकी दिनचर्या में शामिल हो गया। दोनों कमरों के साथ कीचेन आदि की सफाई स्वयं कर लेते थे। सामने कि खुली जमीन में उन्होंने फूलों के पौधे लगा लिए। फेसबुक, ह्वाट्सअप में धीरे-धीरे उनके मित्रों और रिश्तेदारों की संख्या बढ़ती गयी। मित्रों के चयन में उन्होंने वैचारिक समानता और समान अभिरुचियों का ध्यान रखा।

ईश्वर लीला करता है, सब कुछ दे देता है फिर भी कोई कोना खाली छोड़ देता है। वह खाली कोना टीस पैदा करता है। विशम्भर बाबू को इसका रहस्य पता है और समाधान भी। यह प्रेम की टीस है, कोई अतृप्ति है जो सिर उठाये रहती है। जहाँ से पूर्ति होनी चाहिए, नहीं होती, चाहे कारण कितना भी सात्विक क्यों न हो। जीवन की भाग-दौड़ में दबी रहती है। अचानक किसी दिन टीस के रुप में उभरती है। सांसारिक प्रेम के स्थान पर ईश्वरीय प्रेम भरना सर्वोत्तम विकल्प है, लोग करते भी हैं परन्तु कभी-कभी सहज नहीं होता। ऐसे में ईश्वर ही पुनः कोई लीला रचा देता है। विशम्भर बाबू समझते हैं, प्रेम की टीस प्रेम से ही परिपूरित होती है और यह प्रेम वासना रहित होता है। अक्सर लोग ईश्वरीय मूर्ति की जगह संसार की दिव्य मूर्ति बसा लेते हैं। यहाँ पा लेने की चाह नहीं होती, बस किसी का आसपास होना ही पर्याप्त है। सुखद लगता है सौन्दर्यानुभूति करना, किसी के साथ सात्विक भाव से जुड़ा महसूस करना और प्रेम की टीस के साथ जीना। प्रेम का यह भी कोई मनोविज्ञान है।

किसी दिन कोई दस्तक हुई और फेसबुक पर मित्रता के लिए एक नया प्रस्ताव मिला। भेजने वाली की फोटो में पति-पत्नी दोनों थे, प्रोफाइल की सूचनाएं सामान्य ही थीं और अभिरुचि की दृष्टि से कला-साहित्य को पसंद करने वाली। विशम्भर बाबू ने प्रस्ताव स्वीकार करने में किंचित तेजी दिखाई और देर तक उसकी पोस्ट्स पढ़ते, देखते रहे। दरअसल उन्हें कला, साहित्य और संस्कृति से जुड़े लोगों के प्रति हाल के महीनों में आकर्षण व लगाव बढता गया है। मित्रों के साथ बातचीत में ये विषय आते रहते हैं और एक तरह की नयी सुखानुभूति होती है। जिस कड़ाई से उन्होंने अपने लिए नियम बनाए हैं, उसमें कोई ढील देना नहीं चाहते परन्तु साहित्य, कला, गीत, संगीत द्वारा उपलब्ध रसों से परहेज करने का कोई तुक नहीं दिखता। इसलिए उन्होंने स्वयं को थोड़ी छूट देना शुरु कर दिया है।

नयी मित्र बनी रमा अलग तरह से उत्साहित है। मौसम कुछ सुहाना सा है, वातावरण में नयी तरह की खुशबू है और बसन्ती बयार बह रही है। रमा के पास पूछने के लिए ढेर सारे प्रश्न हैं। विशम्भर बाबू उसके प्रश्नों से खुश होते हैं। उन्हें लगता है, रमा जीवन के रहस्यों को, सम्बन्धों और जटिलताओं को समझना चाहती है। स्वयं को मध्यमवर्गीय आम भारतीय परिवार की तरह समझती है, परिधान भी वैसा ही धारण करती है और सोच-विचार के स्तर पर किंचित आधुनिकता लिए हुए है।

शुरु-शुरु में मैसेंजर पर उसकी लम्बी बातों से बचने के लिए विशम्भर बाबू ने अपना फोन नम्बर दिया ताकि सीधे बातें हो सके। रमा ने वैसा नहीं किया। विशम्भर बाबू उसकी लाचारी समझ गये और अपने अति उत्साह पर शर्मिन्दगी महसूस की। कुछ दिनों बाद रमा ने अपना नम्बर दिया परन्तु विशम्भर बाबू ने भी उसका उपयोग नहीं किया। उस नम्बर को उन्होंने कहीं लिखा भी नहीं और ना ही मोबाइल में जोड़ा। शायद कोई भावनात्मक अनुभूतियों का दबाव हो या किसी परहेज की भावना। शेष सब कुछ यथावत चलता रहा जैसे एक-दूसरे के पोस्ट को पढ़ना, पसन्द करना, कभी-कभी टिप्पणी करना। विशम्भर बाबू ने महसूस किया, रमा रुढ़िगत संस्कार वाली मानसिकता के दबाव में है, आधुनिकता को स्वीकार करती है परन्तु सीमा में रहकर। वे उसके इस आदर्श पूर्ण व्यवहार से खुश होते हैं और बार-बार आशीर्वाद देते हैं। ऐसे ही सालों से चल रहा है।

कुछ महीनों पूर्व रमा ने प्रश्न पूछने के साथ फोन नम्बर के लिए आग्रह किया। विशम्भर बाबू को लगा, अब जाकर रमा को विश्वास हुआ है। उन्हें खुशी हुई। उस दिन रमा ने फोन पर बहुत सी बातें की, बहुत कुछ अपने बारे में, घर-परिवार के बारे में बताया और अपनी कुछ तस्वीरें भेजी। वह सुन्दर है, उसके चेहरे में लावण्य है और बोलती सी आँखें हैं। उसकी आवाज में मासूमियत और अलग तरह की खनक है। विशम्भर बाबू को वह 'सर' कहकर सम्बोधित करती है और कृतज्ञ भाव से भरी रहती है। उनकी बातों पर खूब हँसती है। उसने छूट दे रखा है, सर आप अपनी किसी रचना की नायिका बना सकते हैं, यदि कोई चरित्र समझ में आये। विशम्भर बाबू मन ही मन मुस्कराते हैं परन्तु भीतर जाग रहे भावों को व्यक्त नहीं करते। उन्हें पता है, रमा की आँखों में चमक उभर आती होगी और चेहरा खिल जाता होगा। उत्साहित होकर कुछ कहते हैं, रमा खिलखिलाकर हँसती है।

रमा हजारों मील दूर एक बड़े से शहर में अपने पति और बच्चों के साथ रहती है। शायद उसके भी जीवन में कोई खाली कोना है या ज्ञान की कोई ललक, इसीलिए उसके पास प्रश्न हैं। यह किसी के भी जीवन का स्वाभाविक सत्य हो सकता है, इसमें कोई बुराई नहीं है। सामाजिक मीडिया ने ऐसे बहुत से लोगों को जोड़ रखा है।

विशम्भर बाबू रमा को पसंद करने लगे हैं, उसकी चिन्ताओं पर दुखी होते हैं, चाहते हैं, वह खुश रहे, उसके जीवन में कोई असुविधा न हो और उसे अपनों का स्नेह-आदर मिले। रमा सहज स्वीकार करती है, 'आपकी बातों से बल मिलता है, जीवन जीना सरल हो जाता है और रिश्तों की पेचीदगियों से निकलना आसान हो जाता है।' उसकी बातों में भावुकता है, निश्चित ही आँखें नम हो जाती होंगी। विशम्भर बाबू का भी मन भर आता है। रमा पास होती तो अपना स्नेह जताते, प्रेम जताते। वह उनका आशीर्वाद समझती है, खुश होती है और बार-बार प्रणाम करती है।

विशम्भर बाबू कहीं खोये हुए से हैं, क्या यह मिलना ऐसे ही है, क्या कोई ऐसे ही किसी से कहीं भी मिल जाता है?क्या ऐसे ही मिलना आत्मीय होने लगता है? ऐसे ही लगाव-जुड़ाव महसूस होने लगता है? इस परिचय के पीछे के भाव क्या इतने सहज हैं? इसकी तो सीमाएं हैं, संस्कार हैं। विशम्भर बाबू पारंगत हैं, मर्यादा जानते हैं, यह भी जानते हैं, माया ऐसे ही लोगों को नचाती रहती है। यह भी हो सकता है किसी जन्म में सहयात्रा हुई हो, कुछ कदम एक ही डगर पर एक ही भाव लिए साथ चले हों और ईश्वर ने पुनः मिला दिया है। उन्होंने विश्वास पूर्वक मान लिया, रमा उत्साहित है, उसकी आँखों में चमक और श्रद्धा है। रमा में सामाजिक चेतना है, वह लोगों की मदद करना चाहती है, अपना समय देना चाहती है। उसमें उदारता है, करुणा और प्रेम है।

रमा ने बताया था, उसने कुछ यात्राएं की है हाल के महीनों में और पीड़ित लोगों के साथ सहानुभूति, सान्त्वना और विश्वास जगाने का प्रयास किया है। उसने एक तस्वीर भेजी है जिसमें तेजाब से जले हुए चेहरे वाली लड़की मुस्करा रही है। यह रमा के प्रयास का प्रतिफल है, वह अपनी पीड़ा, व्यथा और भय से बाहर निकल आयी है। रमा की साथ में हँसती हुई सौम्य तस्वीर है। विशम्भर बाबू सहसा मुस्कराते हैं, स्वयं को समझाते हैं, अपनी उड़ान को लगाम दो विशम्भर! आगे का चिन्तन भयावह है, अशोभनीय है और दुखी करने वाला है। मित्र मुस्कराते हैं, शायद सच कहते हैं, 'अब तो विशम्भर जवान होते जा रहे हैं, चेहरे पर अद्भुत तेज उभरा रहता है और पुतलियाँ चमकती रहती हैं।' विशम्भर को रमा की बात याद आ रही है, 'सर जी! आपको देखकर मन प्रसन्न हो जाता है। बस हमेशा अपना आशीर्वाद बनाये रखिए।'

'कितने पवित्र और शुद्ध भाव हैं रमा के? उसके भाव को तोड़ा नहीं जा सकता। यही क्या कम है, उससे मिलने के बाद निराश-हताश जिन्दगी भावनाओं, संवेदनाओं और रसों से भर गयी है। जीने की चाह बढ़ गयी है और दूसरों के लिए कुछ करने का मन होने लगा है। कोई रिश्ता नहीं है फिर भी रिश्ता तो उसने जोड़ ही लिया है और अपनी ओर से निभा भी रही है। निभा तो विशम्भर बाबू भी रहे हैं, अपने तरीके से और अपनी भावनाओं के साथ।

रमा अक्सर विह्वल होती है, सोचती है, अपने लोग विशम्भर सर की तरह क्यों नहीं हैं? क्यों लोग अपनी स्त्रियों के प्रति सहानुभूति नहीं रखते?क्यों साथ खड़ा नहीं होते? क्यों साथ खड़ा होना नहीं चाहते? क्यों लोग स्त्रियों को समझना नहीं चाहते? क्या स्त्रियाँ आलीशान घर, गाड़ियाँ, जेवरात, कपड़े और शारीरिक भूख की भूखी हैं? विशम्भर बाबू भी कुछ इन्हीं विचारों के साथ अपनों को देखते रहते हैं और हृदय की गहराई से, मन ही मन रमा को आशीर्वाद देते हैं।

रमा अति उत्साह में है, उसकी आवाज में खनक है, बातों में कोई स्वीकृति है, उसने कहा, 'मेरे मन के खाली कोने को आपने भर दिया है, स्नेह-प्रेम की अनुभूति होती है। चेतना का यह विस्तार मुझे परिपूर्ण कर रहा है। इसमें ना तो भौतिक तौर पर मिलने की आवश्यकता है और ना ही कोई बंधन। आप को मैंने स्वीकार किया है, मेरे शुभचिन्तक के रुप में, मेरे प्रेमी के रुप में और मेरे गुरु के रुप में। बस इतनी ही प्रार्थना है, मेरे प्रेम और आदर भाव को सांसारिक दृष्टि से मत देखियेगा।'

विशम्भर जी की आँखें भर आई हैं, हृदय के दरवाजे पर कोई दस्तक महसूस हो रही है, तेज हवा का झोंका घर के दरवाजे को खोलता भीतर आ गया है और सामने क्यारियों में फूल मुस्करा रहे हैं।

किसी दिन कोई दस्तक हुई और फेसबुक पर मित्रता के लिए एक नया प्रस्ताव मिला। भेजने वाली की फोटो में पति-पत्नी दोनों थे, प्रोफाइल की सूचनाएं सामान्य ही थीं और अभिरुचि की दृष्टि से कला-साहित्य को पसंद करने वाली। विशम्भर बाबू ने प्रस्ताव स्वीकार करने में किंचित तेजी दिखाई और देर तक उसकी पोस्ट्स पढ़ते, देखते रहे। दरअसल उन्हें कला, साहित्य और संस्कृति से जुड़े लोगों के प्रति हाल के महीनों में आकर्षण व लगाव बढता गया है। मित्रों के साथ बातचीत में ये विषय आते रहते हैं और एक तरह की नयी सुखानुभूति होती है। जिस कड़ाई से उन्होंने अपने लिए नियम बनाए हैं, उसमें कोई ढील देना नहीं चाहते परन्तु साहित्य, कला, गीत, संगीत द्वारा उपलब्ध रसों से परहेज करने का कोई तुक नहीं दिखता। इसलिए उन्होंने स्वयं को थोड़ी छूट देना शुरु कर दिया है।

विजय कुमार तिवारी का जीवन वृत्त

विजय कुमार तिवारी
(कवि, लेखक, समीक्षक, कहानीकार, उपन्यासकार और जीवनीकार)
जन्म-15/01/1957,तिलक तिवारी का हाता,जिला-बलिया,उत्तर प्रदेश
शिक्षा - एम.ए.(भूगोल)
लेखन-प्रकाशन - पटना प्रवास में लेखन की शुरुआत 1980 के दशक में। आकाशवाणी पटना से हिन्दी,भोजपुरी की रचनाओं का प्रसारण और पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित।
1990 से साहित्य लेखन-पठन लगभग बंद। सेवा-निवृत्त होकर पुनः 2018-19 से लेखन की शुरूआत।
ई-पुस्तक के रूप में,तीन पुस्तकें किण्डिल-अमेजन पर (1)'मि0 ख का शहर' कहानी संग्रह, (2)'प्रेम में घायल लड़की और अन्य कविताएं' कविता संग्रह, (3)'आत्माओं का ऋण और हमारे सम्बन्ध' धार्मिक-आध्यात्मिक लेखों का संग्रह।
साझा संकलन- 1-'आस-पास की प्रतिध्वनियाँ (1987) '(कविता संग्रह) 2-'एक और आसमान' (1989) (कहानी संग्रह) 3-'कितने यातना शिविर'(2021) (कहानी संग्रह) 4-'THE SOUP' (2022) (हिन्दी से अंग्रेजी में अनुदित कहानियों का संग्रह)
आध्यात्मिक ग्रंथ-'सच्चिदानन्द के सान्निध्य में'(गुरुदेव की जीवनी) (2022),(20 वर्षों से अधिक समय तक चैतन्य परम्परा के संत-सान्निध्य पर आधारित चिन्तन की पुस्तक)
कहानी संग्रह- 1-'कोई दस्तक हुई' (2023)
कविता संग्रह- 1-''पलकों में सोई रही प्यास'' (2023)
समीक्षा पुस्तकें- 1-'उम्मीदों के कवि फूलचंद गुप्ता और उनकी कविताएंःएक पड़ताल'(2022) 2-'समीक्षा के दायरे में आज की कविता'(2022) 3-'डा0 हंसा दीप के कृतित्व पर विमर्श'(2023) 4-समकालीन कहानियाँःसमीक्षा के दायरे में (2023)
सम्मान/पुरस्कार- प्रतिलिपि स्टोरी फेस्टिवल पुरस्कार
सम्प्रति- सेवा-निवृत्त-भारतीय स्टेट बैंक। स्वतन्त्र लेखन
ईमेल- vijsun.tiwari@gmail.com
मो0- 9102939190

धीमान , अरुण कमल के साथ

विजय कुमार तिवारी की छोटी-छोटी मधुरतम स्मृतियाँ

१.
'महोदय,सुना है आप कविताएं लिखते हैं,' मुस्कराते हुए किसी नवयौवना ने पूछ ही लिया। कवि महोदय उत्साहित हुए,आसपास बैठे लोगों को सरसरी निगाह से देखा और उस सौन्दर्यमयी मूर्ति पर दृष्टि केन्द्रित कर ली ,बोले,'मैं कहाँ और मेरी कविताएं कहाँ,आप तो स्वयं ईश्वर की बनाई हुई कोई महान कविता हो।' शर्म की कोई लाली उभर आयी और नवयौवना की पलकें झुक गईं। कवि ने वह दृश्य अपने मन-मस्तिष्क में जज्ब कर लिया और सोचा, समय मिलते ही कोई कविता लिखी जायेगी। दुनिया के सारे कवि तब से कविताएं लिख रहे हैं परन्तु आज तक वह कविता मुकम्मल नहीं हुई है।

२.
किसी पत्रिका के बीच वाले पृष्ठ पर दो तस्वीरें छपी हैं। उपर वाली तस्वीर में दूर क्षितिज तक फैला प्रकृति का सौन्दर्य पसरा हुआ है,नीला आसमान,कुछ आवारा बादल,कलकल बहती नदी,हरियाली और ठीक सामने कोई सौन्दर्यमयी मूर्ति। नीचे वाली तस्वीर में भी आसमान नीला ही है,नदी है,प्रकृति का सौन्दर्य है और कड़कती धूप में,पसीने से लथपथ कोई श्रमशील युवती फसल काट रही है। कवि की कलम रुक गयी है,तय नहीं कर पा रहा कि किसे सहेज ले अपनी स्मृतियों में, सौन्दर्य के प्रतिमान के रुप में।

३.
कहानीकार ने लम्बी सी कहानी लिखी,पत्रिका में छपी और लोगों ने खूब प्रशंसा की। घर में काम करने के लिए नयी मेहरी आयी है। उसके साथ उसका खूब चहकता,मचलता,हँसता-खिलखिलाता नन्हा सा बच्चा है। वह उसे बोरे पर सुला देती है और काम में लग जाती है। मालकिन का लगभग उसी उम्र का बच्चा मुस्कराता हुआ उसी बोरे पर बैठ जाता है और दोनों एक-दूसरे को गले लगाते हैं। दोनों खूब खुश होते हैं,खूब किलकारी मारते हैं और हँसते-बिहँसते हैं। कहानीकार का सारा वर्ग-संघर्ष चिन्तन धरा का धरा रह जाता है और वह सोचता है-जीवन तो सबका ऐसे ही सहज और सरल है,हम ही उसे जटिल बनाते हैं।

४.
जब नौकरी लग गयी,उसकी पोस्टिंग उसी शहर में हुई जहाँ उसके रिश्तेदार पहले से ही रह रहे हैं। सबने स्वागत किया, उसे घर-परिवार में रहने का सौभाग्य मिला और भाई-बहन मिले। बहन उससे थोड़ी छोटी है,उसकी शादी तय हो गई है और तैयारी चल रही है। वह बहन को उसके मनोनुकूल महँगा से महँगा उपहार देना चाहता है। उसने इसकी बावत पूछ ही लिया। बहन ने मुस्कराते हुए पूछा,'जो माँगूँगी,वह दोगे ना? ना तो नहीं कर दोगे?' उसने खुश होता हुआ उत्तर दिया,'जरुर दूँगा, बताओ तो सही।' 'तो ध्यान से सुनो मेरे भाई जान!' बहन फिर मुस्कराई,बोली,'मुझे एक प्यारी सी भाभी ला दो। मुझे और कुछ नहीं चाहिए।' वह विह्वल हुआ,बहन के लिए भौतिक उपहारों के बारे में सोच रहा है और उम्र में छोटी होते हुए भी बहन उसके जीवन साथी के बारे में।

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ स्नेह सुधा
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धम्तरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक) के वार्षिक एवं तीन वर्षीय सदस्य बनें।

वार्षिक सदस्यता के लिए -200/- **तीन वर्षीय सदस्यता के लिए -500/-**

कृपया 'शहर समता' के नाम से चेक या आनलाइन भेज सकते है।
IFSC Code- PUNB0100120 A/c.-1001050011592

व्यवस्थापक
शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक)
289/238 ए (अनंत भवन) कर्नलगंज ,इलाहाबाद-211002

पीडीफ़ के लिए
shaharsamta.blogspot.com
पर जाएँ ।

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332 Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

'समकालीन हिंदी कविता की दशा और दिशा का सम्यक मूल्यांकन :

समीक्षा के दायरे में आज की कविता '

डॉ. ममता पंत १

'समीक्षा के दायरे में आज की कविता' वरिष्ठ समीक्षक, साहित्यकार श्री विजय कुमारी तिवारी जी की समीक्षात्मक पुस्तक है; जिसमें उन्नीस कविता संग्रहों की समीक्षा की गई है। यह पुस्तक समकालीन हिंदी कविता की दशा और दिशा को एक सार्थक अभिव्यक्ति देती है क्योंकि श्री विजय कुमार तिवारी जी ने इस पुस्तक में हाल ही में प्रकाशित हुए कविता संग्रहों पर गंभीरता से चिंतन-मनन किया है साथ ही विविध रचनाकारों के काव्य संग्रह में अभिव्यक्त भावबोध को अपनी आलोचनात्मक दृष्टि से परख कर पाठक वर्ग के समक्ष रखने का एक स्तुत्य कार्य भी किया है उन्होंने। इस पुस्तक में तिवारी जी ने जिन कवियों की रचनाओं को समीक्षा की कसौटी पर कसा है उनमें श्री प्रकाश मिश्रा, विनोद दास, भावना भट्ट,पंकज त्रिवेदी, प्रेम रंजन अनिमेष, कुमार बिंदु, पारमिता षडंगी, भानु प्रकाश रघुवंशी, अमित कुमार मल्ल, हरगोविंद पुरी, डॉक्टर प्रतिभा सिंह, डॉ. विजय कुमार महारना, कुमार अनिल, कर्नल वशिष्ठ, कश्मीरा सिंह, केशव मोहन पांडे, डॉ. उषा किरण एम के मधु और मॉरीशस की साहित्यकार कल्पना लाल जी शामिल हैं जिनके बारे में विजय कुमार तिवारी जी ने स्वयं स्वीकार किया है कि : 'जिन काव्य संग्रहों को पढ़ने, समझने और विवेचनात्मक चिंतन करने का सुखद संयोग बना है, उनके रचनाकार कई वरिष्ठ भी हैं, और युवा भी। सुखद यह भी है, प्रायः सबकी कविताओं में भाव, भावना के साथ हमारे ऐतिहासिक प्राचीन सभ्यता-संस्कृति के तत्व भी मिलते हैं। हम पक्ष में हो या विरोध में अपनी संस्कृति, सभ्यता, जीवन के यथार्थ आदि से अलग नहीं हो सकते। आधुनिकता के साथ प्राचीन का मेल दिखाई देता है। कुछ लोग जान-बूझकर नकारने की प्रवृत्ति दिखाते हैं परंतु पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाते।'(पृ. १६)

वर्तमान में जो कविताएं लिखी जा रही हैं उनमें जन -पक्षधरता की अधिकता है और किसी भी व्यक्ति के जीवन को उसकी संपूर्णता में स्वीकार कर तथा तत्संबंधी जीवन की समस्याओं को गहन भावबोध के साथ स्पष्ट अभिव्यक्त करना कवियों की प्रमुख पहचान रही है । समकालीन कविता जहां अपने समय एवं समाज से संघर्ष करती है वहीं उस पर प्रश्न भी खड़े करती है साथ ही जन-सामान्य के प्रति अपने सकारात्मक दृष्टिकोण को अभिव्यंजित करते हुए उम्मीद की रोशनी भी प्रज्ज्वलित करती है। समीक्ष्य पुस्तक में संकलित सभी काव्य संग्रहों पर की गई समीक्षाओं से यह बात तो स्पष्ट हो जाती है कि कवि हृदय अपने आस-पास भोगे हुए यथार्थ को कल्पनाशीलता एवं अभिव्यक्ति कौशलता से उजागर करता है। कवियों ने प्रेम, प्रकृति, प्राकृतिक आपदाओं, वैश्वीकरण, बाजारवाद हाशिए पर खड़े व्यक्ति सभी पर अपनी लेखनी चलाई है और मानवीय संवेदनाओं को व्यापक अभिव्यक्ति भी दी है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार,नयी दिल्ली के सहायक निदेशक डॉ. दीपक पांडे के अनुसार : 'समाज में परिवर्तित हो रहे मानव मूल्यों के प्रति कवियों का विशेष ध्यान जाता है और अपने अभिव्यक्ति कौशल से समाज के उत्थान की प्रेरणा को वाणी दे रहे हैं और 'सर्वे भवंतु सुखिनः' की भावना को पोषित करने का उपक्रम कर रहे हैं। इस पुस्तक में केशव मोहन पांडेय के कविता संग्रह 'सपने रोज बुनता हूं' पर विस्तृत समीक्षात्मक लेख भी संकलित है। और लेखक ने कविता की संग्रह की भूमिका से वरिष्ठ साहित्यकार श्री अशोक लव जी कविता के बारे में उनके विचारों को उद्धृत किया है जिससे सभी सहमत भी होंगे कि-'वास्तव में कविता संवेदनशील हृदय की भावनाओं की अभिव्यक्ति है।'(पृ.१० -११)

कविता के संबंध में विजय कुमार तिवारी जी के विचार संग्रहणीय हैं : 'कविता में मन के उद्गार व्यक्त करने की अपूर्ण क्षमता होती है और वह हर किसी के मन को छूती, सहलाती है। कविता सुकून देती है और मन की शांति का हरण भी करती है। यह किंचित भिन्न लगता है, कविता एक साथ दोनों प्रभाव कैसे छोड़ती है, कैसे हमारी प्राण-चेतना को उस ऊर्ध्व तक ले जाती है। कविता सफलतापूर्वक यह कार्य संपन्न करती है। उसकी पैठ हमारे अंतरतम तक सहज ही होती है, वह भीतर के तारों को सहज ही झंकृत करती है और हमारा संपूर्ण अस्तित्व नृत्य-मुद्रा अख्तियार कर लेता है।' (पृ.१२) कवि के बारे में समीक्षक के विचार हैं : 'मुझे तो ऐसा लगता है, प्रायः हर व्यक्ति कवि होता है। जो कवि नहीं है या जिसमें काव्यात्मक, रसात्मक, संवेदनात्मक भाव नहीं है, उसमें कोई न कोई अपूर्णता है और वह विश्व, देश, समाज आदि के लिए चुनौती हो सकता है। ऐसा कुछ ना भी हो तो भी वह स्वयं में दुखी या असंतुष्ट रहने वाला प्राणी हो सकता है। यह मनोविज्ञान का विषय है। साहित्य या कविता का विषय इतना ही है कि हर व्यक्ति स्वयं में पूर्ण हो, संवेदनशील हो, स्वयं आनंद अनुभव करे और दूसरों को आनंदित करता रहे।' (पृ. १२-१३) कवि के संबंध में उपरोक्त विचार समीक्षक की जीवनदृष्टि एवं गंभीरता को प्रदर्शित करते हैं।

समीक्ष्य पुस्तक में संकलित समीक्षाओं का अध्ययन करने से यह दृष्टिगत होता है कि तिवारी जी ने बड़े ही मनोयोग से कविता संग्रहों का अध्ययन किया है और उस पर गंभीरतापूर्वक चिंतन-मनन भी किया है। एक समीक्षक का यह बहुत बड़ा दायित्व होता है कि वह किसी भी पुस्तक पर अपने विचारों को पूर्ण स्वतंत्रता एवं निष्पक्षता से प्रस्तुत करे, जो समीक्ष्य पुस्तक की समीक्षाओं में परिलक्षित हुआ है। उनके शब्दों में : 'साहित्य सृजन की तरह समीक्षा, आलोचना भी गतिशील प्रक्रिया है। अक्सर कहा जाता है, हर व्यक्ति को एक अच्छा इंसान होना चाहिए, एक अच्छा इंसान ही अपने समाज को, अपने काल-खंड को बेहतर दे सकता है। ऐसे मतों को स्वीकार करने के अपने लाभ हैं और यह एक तरह से सामान्यीकरण है। इसके अपवाद भी मिलते हैं और देखे जाते हैं। इसलिए मैंने तय किया, मेरा चिंतन रचना आधारित होगा, व्यक्ति आधारित नहीं..... व्यक्ति के बारे में सुनी-सुनाई बातों पर भरोसा नहीं करता। किसी भी रचनाकार का व्यक्तित्व उसके सृजन में परिलक्षित होता है, दिखाई देता है। यह भी संयोग ही है, मैंने अब तक जितने साहित्यकारों की पुस्तकों को पढ़ा है, समीक्षाएं की हैं, दो-तीन को छोड़कर किसी से पूर्व परिचय नहीं रहा है। जिनसे परिचय रहा भी है, बहुत कम समय तक रहा है जबकि हमारा जीवन नित्य परिवर्तनशील है। अक्सर लोग कहते पाए जाते हैं, अमुक लेखन लिखना तो अच्छा है परंतु उसमें अमुक दोष है। इसलिए मैं उस व्यक्ति के रचना-संसार को महत्व देता हूं। जान-बूझकर नकारात्मकता का प्रत्यारोपण नहीं करता या किसी की भ्रूण हत्या जैसा को कुकृत्य नहीं करता। मानता हूं, कोई भी लेखक, समाज की बातें लिखता है, समाज के लिए लिखता है और यथासंभव समाज को बेहतर बनाना चाहता है।' (पृ.१५-१६) उपरोक्त विचार श्री तिवारी जी द्वारा की गई समीक्षाओं में भी दृष्टिगत होते हैं, जो इनकी बहुत बड़ी विशेषता है।

तिवारी जी का भाषा सौष्ठव अद्भुत है। काव्य संग्रहों की समीक्षा में प्रयुक्त भाषा-शैली अपने आप में अप्रतिम है और नए आलोचकों हेतु एक नया मार्ग भी प्रशस्त करती है। एक उदाहरण दृष्टव्य है : 'भावना जी का काव्य सृजन प्राण-चेतना को जगाने और स्पंदित करने वाला है। यहां भाव है, भंगिमाएं हैं, संगीत है और अध्यात्म चिंतन भी। उनकी भाषा गहरे अर्थ संप्रेषित करती है और प्रेम को पूर्णता प्रदान करती है।(पृ. ५३)

गुजरात के बहुचर्चित साहित्यकार और विश्वगाथा पत्रिका के संपादक पंकज त्रिवेदी के कविता संग्रह 'पारिजात' पर वे लिखते हैं कि : 'बड़ा कवि वह है जो जीवन के अनुभवों से मुहावरे गढ़ता है और अपने द्वारा सृजित मानदंडों को स्वयं तोड़ता और बड़ा करता है। भावनाएं महत्वपूर्ण हैं , जीवन की यथार्थता कहीं ज्यादे महत्वपूर्ण है। कवि ऐसे क्षणों में बचने के रास्ते खोजता है और बिंबों में उलझता है। भाषा और शैली उसका साथ देती है। पंकज त्रिवेदी की कविताओं में साहित्य के रस उभरते हैं और जीवन के भी।' (पृ. ४६)

साहित्यकार प्रेम रंजन अनिमेष के बारे में जितना कहा जाए उतना कम है । उनके साहित्य को पढ़ने का सुअवसर मुझे भी मिला और 'समीचीन' पत्रिका के संपादक महोदय के आग्रह पर प्रेम रंजन अनिमेष विशेषांक हेतु उनकी कहानियों पर मैंने एक विस्तृत आलोचनात्मक आलेख भी लिखा। उनके बारे में तिवारी जी लिखते हैं : 'प्रेम रंजन अनिमेष को कुछ मत कहो, हो सके तो खूब ध्यान से सुनो, बल्कि देखो और समझने की कोशिश करो। कोशिश भी नहीं, यह कवि तो स्वयं खुलता जाता है और सहज शब्दावली में सारा दृश्य उपस्थित कर देता है! चमत्कृत होना ही है क्योंकि उसकी छोटी से छोटी कविता का आसमान बड़ा है। यह किसी अतिरेक में नहीं कह रहा और ना ही किसी पूर्व परिचय की पृष्ठभूमि में, अभी तो मैंने इन कविताओं को एकाग्र पढ़ना शुरू किया है। कवि का परिचय कविताएं हैं...।' (पृ. ५७) प्रेम रंजन अनिमेष पर तिवारी जी के विचारों से मैं पूर्णतया सहमत हूं, क्योंकि प्रेम रंजन अनिमेष जितनी अच्छी कहानियां लिखते हैं उतने ही सजग कवि भी हैं। उन्हें यूट्यूब पर भी सुना जा सकता है ।

कश्मीरा सिंह की कविताओं पर स्वतंत्र रूप से अपनी बात रखते हुए तिवारी जी कहते हैं : 'कश्मीरा सिंह की कविताओं का कोई क्रम नहीं है। उनकी कोई कविता स्वतंत्रता की बात करती है तो कुछ देर पहले ही वे कामदेव और कालिदास में उलझी मिलती हैं। इसे दोष नहीं माना जा सकता । लगता है उनका हृदय और मस्तिष्क साथ-साथ काम करते हैं... किसी रचनाकार की यह बड़ी ताकत होती है ।' (पृ.१२७)

विजय कुमार तिवारी जी ने समीक्ष्य पुस्तक में कविताओं पर नीर-क्षीर विवेक से अपनी समीक्षात्मक दृष्टि रखी है। उनके अनुसार : 'किसी नए कवि या कवयित्री को पहली बार पढ़ना अलग तरह की ताजगी से भर देता है । एक तरह का नयापन, कोई उजास या आलोक फैलता है। काव्य की यह सबसे बड़ी देन है मानवता को। काव्य का चिंतन सहज भी है और जटिल भी। जटिलता जल्दी पकड़ में नहीं आती क्योंकि वह बिंबों की आड़ में छुपी रहती है। बिंब सुलझाते हैं और उलझाते भी। भाव-चिंतन, प्रेम, करुणा, संवेदना, संघर्ष और सार्थकता बिंबों के सहारे स्पष्ट दिखाई देते हैं। जीवित रहने के साधनों का अभाव तो व्यथित करता ही है, भावनाओं को प्रभावित करने वाले तत्व अधिक दुखी करते हैं। ऐसे में, सहज ही काव्य का प्रवाह फूट निकलता है। काव्य विधा स्वयं में जीवनदायी है, वह जीवन की ओर खींचती है और एक अलग मनो- संसार में ले जाती है। कविता उम्मीद जगाती है। कविता हमारे भीतर भाव का संसार रचती है और अभाव की चुनौती को स्वीकार करती है। हमारे संघर्ष स्वार्थ के चलते हैं और कविता उसे अस्वीकार करती है ... कविता सच के साथ खड़ी होती है।' (पृ.१३७)

मेरा यह परम सौभाग्य है कि मुझे विजय कुमार तिवारी जी के चिंतन एवं मनन से परिपूर्ण आध्यात्मिक व्यक्तित्व से परिचित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हिंदी साहित्य के प्रति उनका यह समर्पण भाव निश्चित ही प्रेरणादायक है । अपनी सेवानिवृत्ति के बाद भी वे निरंतर नयी रचनाओं को पढ़ रहे हैं और उन पर अपनी समीक्षात्मक दृष्टि भी हिंदी जगत को दे रहे हैं। उनकी समीक्षाएं आज राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो रही हैं, विश्व के कोने- कोने से समीक्षा हेतु उन तक पुस्तकें पहुंच रही हैं, जो उनकी समीक्षा लेखन की सार्थकता और अभिव्यक्ति क्षमता को दर्शाती हैं । 'समीक्षा के दायरे में आज की कविता' से पूर्व उनका एक समीक्षा संग्रह 'उम्मीदों के कवि फूलचंद गुप्ता और उनकी कविताएं' २०२२ में प्रकाशित हो चुका है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'समीक्षा के दायरे में आज की कविता' पुस्तक हिंदी के कवि , शोधार्थियों के लिए एवं नवोदित आलोचकों के लिए भी मील का पत्थर साबित होगी । मैं श्री विजय तिवारी जी को साधुवाद देते हुए आशा करती हूं कि निकट भविष्य में भी अन्य साहित्यिक पुस्तकों पर आपकी समीक्षात्मक दृष्टि से हिंदी जगत आलोकित होता रहेगा।

उड़िया अंग्रेजी के लेखक डॉ जा जी के साथ

पुस्तक : समीक्षा के दायरे में आज की कविता
लेखक : विजय कुमार तिवारी
प्रकाशक : सर्वभाषा प्रकाशन
प्रथम संस्करण : २०२२
पृष्ठ : १५९
मूल्य : रु.४००/-

गोबर गणेश से गणेशानन्द की यात्रा

विजय कुमार तिवारी

संसार में सबके रिश्ते-नाते हैं,मेरे भी हैं। मेरे यानी गणेशानन्द के। घर में शादी की चर्चा चल रही है। चाहने वालों और शुभचिन्तकों ने बचपन में मुझे गोबर जोड़कर गणेश कहना शुरु कर दिया। कोई शोध करे तो जल्दी ही इस निष्कर्ष पर पहुँच जायेगा,मेरा नामकरण अवश्य ही गणेश भगवान के नाम पर किया गया होगा। घर मे गणेश भगवान की पूजा होती होगी और नाम जपते-जपते यही नाम सूझा होगा।

शोध का असली विषय है,मेरे नाम के साथ 'गोबर' कैसे जुड़ा और क्यों जुड़ा? उस व्यक्ति का पता चल जाय,आप समझ सकते हैं,मैं क्या करने वाला हूँ। उस मुँहजले का नाम बताने वाला कोई नहीं है और ना वह कारण जिसके चलते 'गोबर जी' मेरे नाम में आ घुसे। बुल्डोजर चलवा देता,चाहे जो हो। मेरे नाम में 'गोबर' लगाकर पुकारने वाले हजारों हैं। मेरी लाचारी है,सब अपने हैं,बड़े-बुजुर्ग हैं,साथ वाले और गाँव भर के छोटे भाई-बहन हैं।

लड़कियों को देखो,इन सबने अति कर दी है। बहुत प्रेम से मुस्करा कर बोलती हैं,समझ में नहीं आता,आदर करती हैं या उपहास। आसपास मंडराती रहती हैं,यह कर दो,वह कर दो। इन्होंने 'गणेश' को निकाल दिया है और आँखें नचाकर बोलती हैं-'गोबर भैया।'

अच्छा,ऐसा भी नहीं है कि देखने में,पढ़ने-लिखने में बकलोल हूँ,कद काठी पूरी तरह निखर आयी है और गाँव की भौजाई लोग खूब मस्ती करती हैं मेरे साथ। उनका प्यारा देवर तो हूँ, परन्तु 'गोबर देवर'।

जब थोड़ी बुद्धि हुई (ऐसा मानता हूँ,भगवान ने कुछ तो देकर भेजा ही होगा), मैंने गोबर से अपना पिंड छुड़ाना चाहा। बहुत सोच-विचार के बाद नाम के पीछे 'आनन्द' की पूँछ जोड़ ली। उस दिन पहली बार आनंदित हुआ और अगले कई दिनों तक खुशी में डोलता-मटकता रहा। भीतरी आलोक से इस कदर आलोकित था कि बहुतों को कुछ समझना छोड़ दिया। महसूस हुआ,सब समझने लगे हैं,मैं भाव खा रहा हूँ या अपने आगे किसी को कुछ नहीं समझता। खुशी हुई। मैं यही चाहता था। गोबर गणेश से गणेशानन्द की यात्रा ने मुझे चौंका दिया। सब से कहना है, कभी भी स्वयं को दीन-हीन मत समझो।

अब मेरे कपड़े थोड़े साफ-सुथरे रहने लगे,बालों को संवारता रहता,चेहरा उल्लसित रहने लगा और आँखों में चमक आ गयी। सुखद परिणाम भी दिखा, जो श्यामा कभी देखना पसंद नहीं करती थी,वह अब मिलने-जुल ने और हँसने-मुस्कराने लगी है। साथ के लोग गम्भीर बातों में मुझे शामिल करने लगे हैं। आश्चर्य तो तब हुआ जब लोगों ने मेरी बातों को स्वीकार करना और आदर देना शुरु कर दिया। घर और रिश्तों में भी सब के भाव बदले।

शादी के लिए लड़की वाले आने वाले थे। घर में तैयारी थी। दुआर पर चारपाई,चौकी और कुर्सियाँ लगा दी गयीं। मैंने अपना उपलब्ध सबसे अच्छा जामा पहन लिया। भीतरी आलोक बाहर चेहरे तक पूरा पसरा हुआ था। बगल के दुआर से धूलि-धूसरित,फटेहाल भिखारी बाबा आ धमके। लड़की वालों की पहली भेंट उन्हीं से हुई। उन्होंने हँसते हुए कहा,'अच्छा तो आप लोग गोबर गनेसवा के लिए आये हैं? अब बहुत सुधर गया है। अपना नाम खुद ही बदल लिया है,गणेशानन्द हो गया है।' भिखारी बाबा ने आवाज दिया,'ए गोबर गनेसवा! आओ-आओ, देखो लड़की वाले लोग आये हैं।' मैं बाहर आया। शीघ्र ही वे लोग चले गये। जो होना था,हो चुका था।

देखा,श्यामा मुस्करा रही है,उसने पूछ ही लिया,'गोबर भैया! शादी कब हो रही है आपकी?' समझ में आ गया, 'गोबर' से मुक्ति होने वाली नहीं है। मरने के बाद भी 'गोबर गणेश' ही रहूँगा।

श्यामा कोई अकेले नहीं है,गाँव भर की लड़कियाँ लगी रहती हैं। मैं पूछता हूँ,'तुम लोग सुन्दर हो,बड़ी-बड़ी आँखें हैं,गोरी-गोरी हो,'गोबर' को लेकर मेरी खिन्नता दिखाई नहीं देती? भाई को 'गोबर' कहकर पुकारना अच्छा है क्या? मैं तो कभी किसी को 'गोबरी' नहीं कहता।

उस दिन स्थिति नाजुक मोड़ पर थी,श्यामा मेरा नाम यानी 'गोबर भैया' कहकर हँस रही थी। उसकी दादी ने देख लिया। भला किसी के सिर पर आसमान आ सकता है,लेकिन दादी ने उठा लिया और भला-बुरा सुनाने लगी। पहली बार मुझे सुकून मिला,कोई तो है जिसने मेरी तरफदारी की। मैं उनकी आवभगत करने लगा,उनके आसपास मंडराने लगा और उनकी सेवा में तत्पर रहने लगा। मुझे लगा,यही हैं जो मेरा उद्धार कर सकती हैं और मेरे नाम की गड़बड़ी मिटा सकती हैं।

हतभाग्य! श्यामा दौड़ी-दौड़ी आयी,बोली,'दादी ने कहा है,गोबरा को बुला लाओ! जल्दी चलो।'

मैं वहीं बैठ गया मानो भीतर का सारा जोर खत्म हो गया हो,बहुत चिढ़ा,बहुत गुस्सा हुआ और उनके घर की ओर देखना तक बंद कर दिया।

गाँव के मास्टर साहब सम्बोधन करते समय 'महाशय गोबर गणेश' कहा करते थे,समझ नहीं आता था कि गाली दे रहे हैं या सम्मान कर रहे हैं। एक दिन पूरी संजीदगी से मैंने अपनी समस्या बतायी। मेरा रोआँसा मुँह लटका हुआ था,निरीह सा खड़ा था। उन्होंने कुछ देर तक मुझे गौर से देखा। इस तरह गम्भीर होना,मुझे लगा,आज कुछ समाधान हो जायेगा। उनके चेहरे पर नाना भाव आ-जा रहे थे,मेरी धड़कन बढ़ी हुई थी,भीतर किंचित उम्मीद थी। उन्होंने कहा,'देखो गोबर! नाम में कुछ नहीं रखा है।'

वे कुछ और बोलते,मुझे लुत्ती लग गया था,गाँव के पूज्य नहीं होते तो आज कुछ हो जाता। मेरा चेहरा प्रज्वलित, आक्रोशित था। सहसा उनकी निगाह पड़ी,सहम से गये,किंचित भय हुआ होगा,बोले,'जीवन में कर्म महत्वपूर्ण है, ज्ञान महत्वपूर्ण है,अपना विचार-व्यवहार महत्वपूर्ण है। भगवान गणेश जी की काया देखो,उन्हें उनके शौर्य,साहस और कर्मों के आधार पर पूजा जाता है।'

तनिक चैन मिला,जलते हुए मन को थोड़ी ठंडक सी लगी। बहुत देर तक नाना उदाहरणों से समझाते रहे और धीरे-धीरे मैं अपनी धंसान से बाहर निकला। मन शान्त हुआ।

अगले दिन गाँव में जलसा होने वाला था,क्षेत्र के विधायक जी आने वाले थे। शीतल बयार बह रही थी,चारों ओर हरियाली थी,कोई सरकारी योजना की चर्चा होने वाली थी। पहली बार मैं भी उत्साहित हुआ और सेवा-सहयोग करने में लग गया। अति व्यस्त देखकर विधायक जी ने मुझसे पूछा,' आपका नाम क्या है?' मन प्रसन्न हुआ,चेहरा दमकने लगा,मैंने पूरे उत्साह से कहा, 'मेरा नाम गोबर गणेश है।' चारों ओर हँसी का फव्वारा सा छूटा। मुझे सम्मान जैसा लगा, जरा भी ग्लानि, क्षोभ जैसा कुछ भी नहीं महसूस हुआ। उन्होंने प्रसन्न होते हुए कहा,'आज से आप गोबर गणेश नहीं,गणेशानन्द जी हैं। आप आनंद की मूर्ति हैं,गणेशानन्द नाम ही उचित है।'

भिखारी बाबा बोले,' इसका नाम गणेशानन्द ही है। गणेश नाम इसके दादा ने रखा था,पता नहीं कैसे गोबर जोड़कर लोग बोलने लगे। स्कूल में, वोटरलिस्ट में गणेशानन्द ही है।'

मन उत्साहित हुआ,अब शायद 'गोबर जी' मुझ पर कृपा कर दें,मुझे और मेरे नाम से ससम्मान विदाई ले लें।

श्यामा बहुत खुश थी,मुस्कराते हुए,आँख नचाकर बोली,'मेरे गणेशानन्द भैया!' गाँव भर की लड़कियों ने गणेश भगवान जी के भजन गाये और भौजाइयों ने गणेशानन्द के साथ हँसी-ठिठोली कीं। भिखारी बाबा आशीर्वाद दे रहे थे,'खूब खुश रहो गणेशानन्द! इस लगन में हाड़ में हल्दी लगे।' दादी ने पुकारा,'ऐ गणेशानन्द! खाँची में गोबर रखा है,फेंक आओ।' लगा, मैं खाँची का गोबर नहीं,बल्कि अपने नाम से,अपनी चमड़ी से खरोंच-खरोंच कर,निकाल-निकाल कर गोबर फेंक रहा हूँ।

डॉ भावना सिन्हा के साथ

लघुकथा

संपादक की प्रतिक्रिया

विजय कुमार तिवारी

आज सुखद संयोग बना,एक नामचीन कहानीकार ने सुबह-सुबह प्रणाम भेजा। मोबाइल की घंटी बजी, मेरी नींद टूट गयी। लगा, कहीं से फोन आया है। फोन तो मौन था। ह्वाट्सअप देखा। दस-बारह नामों के सामने हरी बत्तियाँ जल रही थीं। रात भर जागते रहते हैं लोग ,सुप्रभात का संदेश भेजते हैं और नाना चिन्ताएं जताते हैं। शुरु-शुरु में थोड़ा अच्छा लगता था,अब तो आदत सी पड़ गयी है। कभी-कभी आश्चर्य होता है,इतनी मनुहार,इतनी चिन्ता,इतना प्रेम शायद कोई अपना भी नहीं करता। यदि अपना कोई सचमुच का रिश्तेदार करने लगता है तो अलग से चिन्ता होने लगती है,जरुर कोई मतलब होगा। खैर,यह मेरी ही समस्या या मेरा ही आनंद नहीं है,पूरा हिन्दुस्तान,पूरी दुनिया मजा ले रही है। हम भी ले रहे हैं,आप भी लीजिए।

ह्वाट्सअप पर सबसे उपर हरी बत्ती मुस्कराती हुई लगी। नाम जाने-माने कहानीकार का है,बहुत स्नेही व्यक्ति हैं,उनका मेरे प्रति सुन्दर भाव-विचार रहता है। मैंने नाम पर क्लिक किया। पूरा संदेश खिलखिलाता हुआ मेरे सामने था। मन की झिझक खत्म हो गयी थी,धीरे-धीरे किसी सुखद भाव-संवेदना की अनुभूति होने लगी। ऐसे मौकों पर भीतर की खुशी को रोक पाना सम्भव नहीं होता। संदेश पर क्लिक किया। जानी-मानी साहित्यिक पत्रिका का बिहँसता हुआ आवरण खुला और साथ में पूरी पत्रिका की पीडीएफ संलग्न थी। ज्ञात हुआ,कहानीकार महोदय के कहानी संग्रह पर लिखी मेरी समीक्षा छपी है।

'कम से कम आभार प्रकट करना चाहिए',मैंने सोचा और संपादक महोदय को फोन लगा दिया। घंटी बजी और उधर से धीर-गम्भीर आवाज उभरी। अभिवादन के बाद आभार ज्ञापन की औपचारिकताएं पूरी हुई। लगा,शीत ऋतु का पूरा प्रभाव है वहाँ संपादक जी के शहर में। शायद अभी सूरज नहीं निकला है या संपादन सम्बन्धी कोई समस्या चल रही है उनके दिल-दिमाग में। वह जोश नहीं दिखा जो अक्सर ऐसे मौकों पर साहित्यिकों के बीच उभर आता है। हम पूर्व परिचित नहीं है,ऐसे में बात को बढ़ाने का कोई आधार नहीं सूझ रहा था। मैंने अपनी आभार वाली भावनाओं को दुहराना चाहा और कहा,'अक्सर मेरी समीक्षाएं बड़ी और व्यापक होती हैं। आपने श्रम करके पत्रिका की एडिटिंग की है,समीक्षा थोड़ी छोटी हो गयी है।'

पहले संपादक महोदय फोन पर मुस्कराए या हो सकता है मुझे ही ऐसा लगा हो फिर उनके बातचीत के अंदाज से लगा,वे गम्भीर मुद्रा में चादर ओढ़े अपने तख्त पर विराजमान हैं। मैंने भी अपने पाँवों को समेट लिया और उन्हें ध्यान से सुनने लगा। उन्होंने कहा,'मैं बिल्कुल अकेले ही लगा हुआ हूँ इस पत्रिका के पीछे। झाड़ू लगाने से लेकर,प्रूफ देखना,सैकड़ों रचनाओं को पढ़ना,छाँटना आदि-आदि। आप समझ सकते हैं मेरी बेचैनी,परेशानी।' स्वाभाविक था,मैंने सहानुभूति पूर्वक उनकी लगन की,धैर्य और समर्पण की सराहना की।

उन्होंने कहा,'बुरा मत मानियेगा,समीक्षा-लेखन को मैं 'थैंक-लेश' काम मानता हूँ। अनेक वर्षों तक मैंने अपनी पत्रिका में कोई समीक्षा नहीं छापी। पता नहीं लेखकों को कौन सी बीमारी लग गयी है,प्रेस से पुस्तक निकली नहीं, समीक्षा लिखवाने की दौड़ शुरु हो जाती है।' थोड़ा रुक कर उन्होंने गहरी साँसे खींची,किंचित दुखी भाव से बोले,' समीक्षा के नाम पर जो चल रहा है,मुँह से कटु वचन निकलते हैं। कोई पुस्तक पढ़ता नहीं,सब के सब लेखक को प्रसन्न करने में लगे रहते हैं। संपादक,प्रकाशक और लेखक सबको अपने मन का लिखवाना है। सब धंधा बना हुआ है। कुछ को छोड़ दीजिए, सारे के सारे प्रकाशक प्रूफ और व्याकरण की गलतियाँ छोड़ देते हैं। लेखकों से पैसे लेते हैं,उन्हीं से टाइप करवाते हैं और बिना कुछ देखे छाप देते हैं। और ये लेखक! रातों-रात प्रसिद्धि चाहते हैं। संपादक क्या करे? नित्य रचनाएं पहुँचती हैं, कविता-कहानी के नाम पर बहुतायत रचनाएं ना तो कविता होती हैं और ना कहानी। जहाँ थोड़ी संभावना दिखती है,लाल कलम से सुधारकर,संकेत करता हूँ,देख लो अपना चेहरा, अपने लेखन में। नहीं,उन्हें कुछ नहीं देखना,ना कुछ समझना। स्वयं को पता नहीं क्या समझते है? कुछ तो ऐसे हैं,आज रचना भेजी,तीन दिन बाद से उनके फोन की घंटी बजने लगती है। ऐसे बात करते हैं मानो यहाँ उनका कोई नौकर बैठा है। जरा भी धैर्य नहीं है।'

शायद वे थक चुके थे, उन्होंने गहरी सांस ली और धीमी आवाज में कहना शुरु किया,' आपको भला यह सब क्यों सुना रहा हूँ? मैं इतना ही कहना चाहता हूँ,ठीक है मेरा अपना भी शौक है,इसी बहाने साहित्य की थोड़ी सेवा हो रही है। लेखकों,पाठकों को भी समझना चाहिए। मैं अपनी कोई रचना अपनी पत्रिका में नहीं डालता और ना ही किसी से अपने संग्रह पर समीक्षा लिखवाता हूँ।'

मैंने फिर से सान्त्वना,सहानुभूति की बातें की,उनके द्वारा हो रही साहित्य की सच्ची सेवा की प्रशंसा की और यह भी कहा,'बिना त्याग,समर्पण,धैर्य और श्रम के इतनी प्रतिष्ठित पत्रिका अनवरत नहीं निकल सकती। पत्रिका ने एक मुकाम हासिल किया है। मेरे लिए गौरव है,आज इस चर्चित,प्रतिष्ठित पत्रिका में मुझे स्थान मिला है। आप पुनः मेरा आभार स्वीकारें और श्रेष्ठ संपादन के लिए बधाई भी।'

शायद उनका मन शांत हो चुका था,भीतर की भड़ास निकल चुकी थी,उन्होंने आग्रह पूर्वक कहा,' मैं शीघ्र ही लेखकीय प्रति आपको भेजवाता हूँ। पीडीएफ तो मिल ही गयी होगी? अपना रचनात्मक सहयोग बनाए रखियेगा।'

मुझे खुशी है,संपादक महोदय,पत्रिका के अगले अंक के संपादन में नये जोश के साथ जुट जाएंगे।

मैं उनसे कह पाता तो कहता. 'हर व्यक्ति में कोई न कोई कीड़ा होता है। वह चैन से बैठने नहीं देता,बेचैन कर देता है। कोई कागज रंगने लगता है,कोई संपादन करने लगता है,प्रकाशक, वितरक, विक्रेता सब जुड़ जाते हैं। सब अपने-अपने हिस्से की सेवा करते हैं और पाठकों तक ज्ञान, विषय-वस्तु पहुँचाते हैं। हमारा-आपका सुख-संतोष भी इसी में है और इसी संगति-विसंगति में हम सबका जीवन है। सुखी होइए और आनंद लीजिए।

प्रयागराज से आदरणीय श्रीप्रकाश मिश्र जी का आशीर्वचन

विजय कुमार तिवारी

आज का दिन मेरे लिए महत्वपूर्ण है,आज मुझे श्रद्धेय गुरुदेव श्रीप्रकाश मिश्र जी का प्रत्यक्ष आशीर्वाद मिला है। मेरे लेखन के शुरुआती दौर में उन्होंने अपनी पत्रिका 'उन्नयन' में मेरी कविताओं को स्थान दिया था। तब एक-दो बार हमने पत्र-व्यवहार भी किया था। बीच के 30-32 वर्ष मेरे लिए साहित्य की दृष्टि से गुमनामी के रहे। सेवा-मुक्ति के बाद पुनः लौटा हूँ और साहित्य-साधना में लगा हूँ। यहाँ एक प्रसंग लिखना जरुरी है,मई-2021 में मैंने समीक्षा/आलोचना पर काम करना शुरु किया तो कुछ पुराने साहित्यिक मित्र,शुभचिन्तक सामाजिक मीडिया,फेसबुक के मंच पर मिले, पुरानी यादें ताजा हुईं। आदरणीय मिश्र जी का मिलना किसी साहित्यिक गुरुदेव के मिल जाने जैसा लगा। उन्होंने न केवल मुझे याद किया,बल्कि खुलकर आशीर्वाद दिया। मैंने अपनी दो समीक्षाएं इस भावना के साथ उन्हें प्रेषित की कि उनका मार्ग-दर्शन और आशीर्वाद मिले। मुझे खुशी हुई,उन्होंने बिना देर किए मेरा लिखा पढ़ा,कुछ सुझाव दिए और साथ में अपनी दो पुस्तकें भेज दी। आज उनका आशीर्वाद मेरी समीक्षा पुस्तक 'समीक्षा के दायरे में आज की कविता' पर टिप्पणी के रुप में मिला है। इस पुस्तक पर अभी हाल में ही अल्मोड़ा में रह रही यूनिवर्सिटी की असिस्टैंट प्रोफेसर डा0 ममता पंत ने विस्तृत समीक्षा की है।

सादर आभार सहित आदरणीय मिश्र जी की टिप्पणी आप सभी के अवलोकनार्थ-

श्रीप्रकाश मिश्र

विजय कुमार तिवारी अस्सी के दशक में कविताएं लिखते थे। वे छपने लगी थीं और उनकी पहचान भी बनने लगी थी। फिर अचानक वे परिदृश्य से गायब हो गये। पता चला कि यह बैंक की नौकरी के दबाव के चलते हुआ। फिर अचानक वे पुनः परिदृश्य पर आये, दो-तीन साल पहले सेवानिवृत्ति के बाद। पर क्षेत्र दूसरा था, आलोचना। वह आलोचना साहित्य की हर विधा की थी। विशेष पहचान बनी कविता और उपन्यास के क्षेत्र में। अभी लिखते दो वर्ष भी न बीते होंगे कि कोई सवा सौ लेख विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में आ चुके हैं। इधर पांच पुस्तकें भी छप कर आ गयी हैं।

अभी जो पुस्तक मेरे सामने है, उसका नाम है,' समीक्षा के दायरे में आज की कविता' । हमारे समय में समीक्षा विचारधारा की दृष्टि से रचना देखने का हथियार बन गयी है। उसके लिए कुछ सेट स्कूल हैं। प्रगतिशीलों के लिए मार्क्सवाद है, दलितों के लिए दलित विमर्श, स्त्रियों के लिए स्त्री विमर्श, जनजातियों के लिए आदिवासी विमर्श, हाशिए के लोगों को लेकर लिखे के लिए हाशिए का विमर्श, वगैरह। गनीमत है कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का अभी कोई विमर्श नहीं बना है। पर सुना है कि उसकी प्रक्रिया आरंभ हो गयी है। बस अभी प्रचुर साहित्य सामने नहीं पड़ा है। इनका परिणाम यह है कि पूरी पुस्तक को दृष्टि-विशेष से देख कर एक लिखित बयान दे दिया जाता है और उसे सिद्ध करने के लिए उद्धरण दे दिए जाते हैं। परिणामस्वरूप कविता की तमाम बारीकियां आचक्षु नहीं हो पातीं और समीक्षा की पुस्तकें अच्छे - अच्छे पाठकों को पढ़ने के लिए आकर्षित नहीं कर पातीं। विजय कुमार तिवारी ने इस प्रचलन को तोड़ा है। उन्होंने एक-एक कविता को उठाया है और उसका सम्यक विश्लेषण किया है। वह विश्लेषण उस तरह का नहीं है, जिस तरह का विखंडनवादी प्रस्तुत करते हैं और उससे सामाजिक, राजनीतिक सन्देश निःसृत करते हैं। बल्कि उस तरह का है जो एक मासूम पाठक काव्यानंद लेने के लिए चुभला - चुभला कर करता है। इससे एक अद्भुत पठनीयता उत्पन्न होती है, जो एक सामान्य पाठक को भी समीक्षा पढ़ने के लिए आकर्षित करता है। समीक्षा का काम समीक्षित पुस्तक को पढ़ने के लिए पाठक में रुचि जगाना होता है और यह काम यह पुस्तक बखूबी करती है।

इस पुस्तक में तिवारी जी ने उन्नीस संग्रहों पर लिखी समीक्षाएं संकलित की हैं। वे संग्रह श्रीप्रकाश मिश्र, विनोद दास, पंकज त्रिवेदी, भावना भट्ट, प्रेमरंजन अनिमेष, पारमिता षणंगी, कुमार विंदु, भानु प्रकाश रघुवंशी, हरगोविंद पुरी, अमित कुमार मल्ल, प्रतिभा सिंह, विनय कुमार महारना, कुमार अनिल, कश्मीरा सिंह, कर्नल वशिष्ठ, केशव मोहन पांडेय, उषा किरण खान, एम.के.मधु, और कल्पना लालजी के हैं। तिवारी जी ने एक भूमिका भी दी है, जिससे उनके पाठकीय भावा का खुलासा होता है। उनकी भाषा इतनी सहज और तरल है कि पुस्तक को पढ़ने के लिए आकर्षित करता है। एक समीक्षा पुस्तक की पठनीयता अपने आप में एक उपलब्धि है।

बाकी पुस्तक पढ़ कर देखें।

श्रीप्रकाश मिश्र

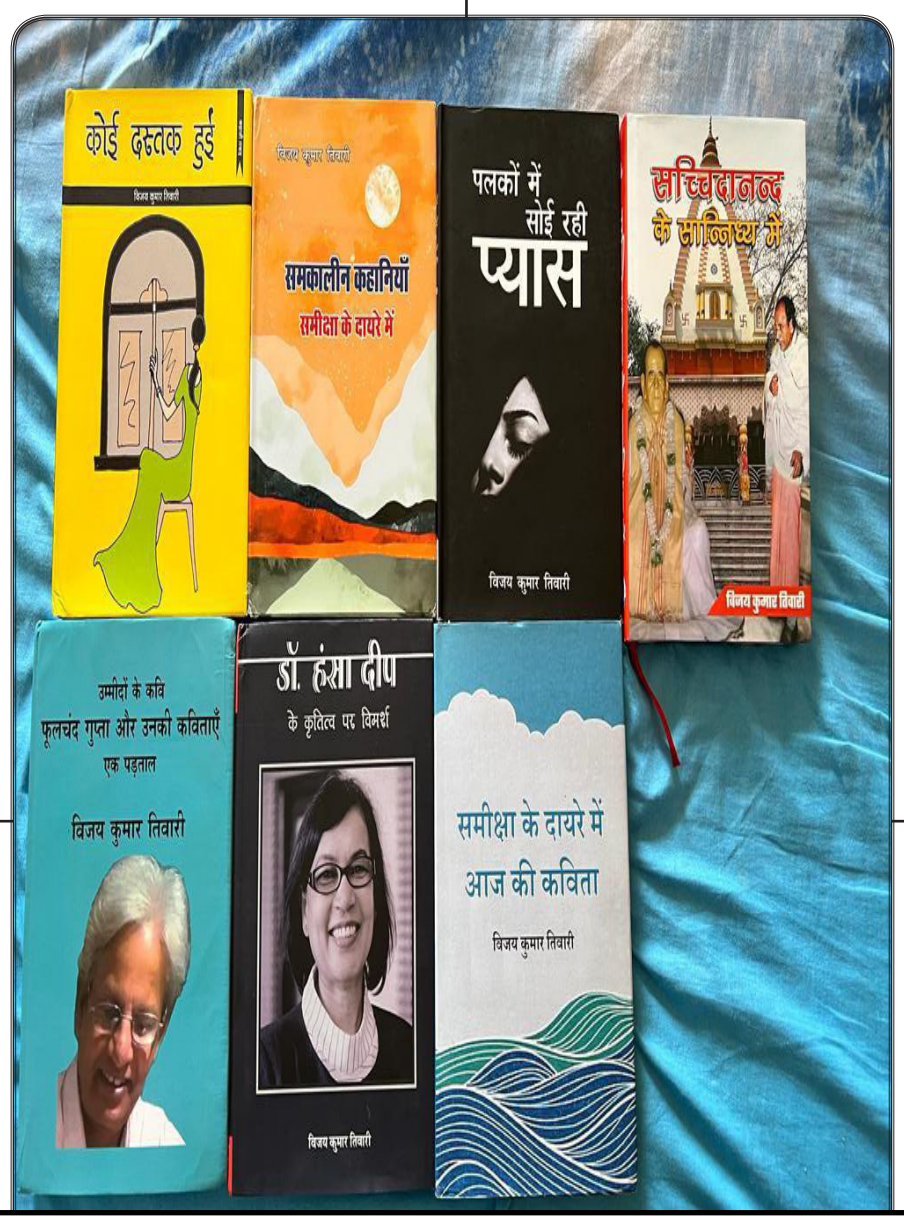

विजय कुमार तिवारी अब तक प्रकाशित पुस्तकें

पृष्ठ 1 का शेष...

कथा विधा और मेरा समीक्षात्मक चिन्तन....

करता है और अपनी सहज अभिव्यक्ति की विधा का चुनाव करता है। हर लेखक उसी विधा को अपनाता है जिसमें सहज स्वाभाविक तौर से अपने अनुभूत संसार को संतोषप्रद स्तर तक अभिव्यक्त कर सकता है। निर्भर करता है कि उसका अनुभूत संसार साहित्य में कितने फलक तक फैला हुआ है। गद्य और पद्य दोनों में विस्तार की पूरी संभावना होती है। गद्य परपरा में कहानी विधा में शायद सर्वाधिक लेखन होता है। हिन्दी में ही नहीं,दुनिया की तमाम भाषाओं में कहानियाँ खूब लिखी और पढ़ी जाती हैं। कालक्रम की दृष्टि से देखा जाये, कहानी लेखन भी उतना ही प्राचीन है जितना काव्य साहित्य। कहानी लेखन में बहुत सी सुविधाएं हैं और स्वतंत्रता भी। आकार में कुछ कहानियाँ छोटी होती हैं,वही कुछ कहानियों का विस्तार सैकड़ों पृष्ठों तक होता है। समीक्षक अक्सर उल्लेख करते हैं, कुछ कहानियाँ औपन्यासिक वृत्ति की होती हैं।

कोई उम्मीदों में जीता है,कोई नाउम्मीदी में, दोनों की दिनचर्या में फर्क होता है। साहित्य में दोनों समाहित होते हैं,दोनों पर चर्चा होती है और जीवन सम्बन्धी निष्कर्ष दोनों को दृष्टिगत रखते हुए निकाले जाते हैं। दुखी होने की आवश्यकता नहीं है,फिर भी लोग दुखी रहते हैं,परेशान होते हैं और रोना रोते हैं। ऐसे लोगों को भी झुठलाया नहीं जा सकता। साहित्य किसी को झुठलाने की कोशिश नहीं करता। वह तो आईना होता है,हमारा,आपका,समाज और विश्व का चेहरा दिखा देता है। मौसम का रंग ही ऐसा है,हमारे भीतर-बाहर के दृश्य ही बदरंग हैं,साहित्य अपना धर्म निभाता है।

आज कहानी केवल भावनाओं तक सीमित नहीं है,केवल संकटों की चर्चा नहीं करती बल्कि संघर्षों की गाथा लिए होती है और उसका विस्तार बहुत उम्मीदें जगाता है। उसका आकार-प्रकार दोनों अर्थपूर्ण होते हैं और आकर्षित करते हैं। उनका विस्तार मूल कथ्य-कथानक के साथ बहुत कुछ समेटे हुए होता है जो हमारे चिन्तन को समृद्ध करता दिखाई देता है। अक्सर कहानी के तत्वों की तलाश में सामाजिक संवेदना,धड़कता हृदय,स्पंदित मन की चर्चाएं और चुनौतियों से टकराने,संघर्ष करने की बातें होती हैं। किस कहानी को श्रेष्ठ माना जायेगा,शायद अभी भी तय नहीं हो पाया है। हाँ,इससे इतर कमजोर पक्ष की चर्चा में बहुत सी बातें की गयी हैं। यह एक तरह की उलझन है और पाठकों,समीक्षकों,आलोचकों को उलझाती है। विडम्बना यह भी है,कोई अपनी दृष्टि में जिसे अच्छी रचना बताता है,दूसरा उसी रचना से प्रसन्न नहीं होता और नाना विवेचना करता है। यहाँ तक तो ठीक है,समस्या तब खड़ी होती है जब विमर्श में जड़ता दिखाई देने लगती है। समाज गतिशील है, प्रकृति में गतिशीलता है,हमारी सम्पूर्ण सृष्टि की प्राण-चेतना में गतिशीलता, बदलाव और विकास है,ऐसे में हमारे चिन्तन,लेखन में भी गतिशील तत्व होंगे ही,हमारा साहित्य उससे अछूता नहीं रह सकता। कभी-कभी यह प्रवाह सतह पर होता है,सबको दिखाई देता है परन्तु हमेशा यह अन्तर्धारा के रुप में प्रवाहित होता है जिसे सब नहीं समझ पाते। हमारे साहित्य में यह अन्तर्धारा बहती रहती है और सृजन चलता रहता है।

कहानी गढ़ने में कई बार हमारी भीतरी मनःस्थिति,हमारी भावुकता,करुणा, हमारा उछाह,जोश प्रभावित करते हैं तो कई बार बाह्य घटनाएं,सामाजिक प्रभाव और देश,काल,परिस्थितियों का प्रभाव होता है। अक्सर देखा जाता है, एक ही घटना को भिन्न-भिन्न लोग भिन्न-भिन्न तरीके से ग्रहण करते हैं। स्वाभाविक है,सभी की कहानियाँ भिन्न-भिन्न प्रभाव लिए होंगी। मूल्यांकन करते समय या पढ़ते समय समीक्षक,पाठक या आलोचक की मनःस्थिति आदि का भी प्रभाव पड़ता है। इसलिए यह मानकर चलना चाहिए कि अपने-अपने तरीके से,अपनी-अपनी जगह सब सही हैं और सब मिलकर कथा साहित्य को या सम्पूर्ण साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं। यहाँ टकराहट नहीं है,बात है अभिव्यक्ति की। हर लेखक अभिव्यक्त होना चाहता है। पूरी सृष्टि यही चाहती है। अधिकांश लोग स्वयं को व्यक्त करते हैं,कुछ हैं जिन्हें दुनिया भर की पीड़ा महसूस होती है। ऐसे भी लोग हैं जिन्हें अपने साथ दूसरे और पूरी दुनिया का सुख,सौन्दर्य दिखाई देता है। भीतर कोई बेचैनी है,कोई तड़प है,कुछ है ऐसा जो बाहर निकलना चाहता है,व्यक्त होना चाहता है और लोगों तक पहुँचना चाहता है। लेखन को लोग पीड़ाजनित मानते हैं और संसार के लोगों तक पहुँचाना चाहते हैं। सुखद अनुभूतियों,गहरे आत्म समर्पण को लिखा जाता है और विरोधों को भी। इसी क्रम में संगतियों व विसंगतियों की चर्चा होती है और उनके निराकरण के उपाय तलाशें जाते हैं। टिकता वही है जो श्रेष्ठ है,सर्व स्वीकार्य है और सर्वहिताय है। समस्या तब खड़ी होती है जब कोई किसी वाद की शरण होता है या सहारा लेता है। यह वैसे ही हुआ मानो हमने किसी दूसरे की बनायी सड़क पर चलना शुरु कर दिया। परिणाम क्या होगा? हम वहीं पहुँचेंगे जहाँ वह सड़क ले जायेगी या जहाँ सड़क बनाने वाले हमें ले जाना चाहते हैं। किंचित आश्चर्य और दुख होता है,लोग उन सड़कों पर चलते हुए आसपास की हरियाली,मौसम की विविधता,जीवन की सुखद अनुभूतियाँ आदि कुछ भी देख नहीं पाते,अपने भीतर की क्रिया-प्रतिक्रिया की अद्भुत शक्ति का भी प्रयोग नहीं करते और ऐसे चलते जाते हैं मानो किसी नशे में हैं। यह सुगम है,सरल और सहज है परन्तु परिणाम भी वही होगा जो सदियों से इस मार्ग पर चलते हुए पाया है और दुनिया को नमक-मिर्च लगाकर दिखाया है। मानवता और मनुष्य की बातें होती हैं परन्तु उनका मनुष्य वर्गों में बंटा होता है,समग्रता में नहीं होता। यही सबसे बड़ी विडम्बना है। विशेष अध्ययन या समझ के लिए मनुष्य के वर्ग देखे जा सकते हैं और हर वर्ग की बेहतरी की चिन्ता होनी चाहिए। ऐसा नहीं होता। होता यह है कि एक वर्ग को दूसरे के सामने खड़ा कर दिया जाता है और टकराव,संघर्ष की स्थिति बन जाती है। दुर्भाग्य यह भी है कि ऐसे लोग सच्चाई जानते हैं और यह भी जानते हैं कि मनुष्य का भला किसमें है परन्तु उनके सारे प्रयास एजेण्डा के तहत होते हैं। तात्कालिक लाभ भले किसी को हो जाय,मनुष्यता की हानि होती है। आगे चलकर उनकी भी हानि होती है जो ऐसे लोगों के एजेण्डा का शिकार होते हैं।

हर रचनाकार अपने आसपास की दुनिया का चितेरा होता है। बड़ी ही बारीकी से,बड़ी सूक्ष्मता से वह सब कुछ देखता है और जीवन-मूल्यों को खोज निकालता है। जीवन-मूल्य की पकड़ ही लेखक को महान बनाती है। उनको निर्धारित करने वाले तत्वों की समझ और उनके आधार पर स्थिति-परिस्थितियों का मूल्यांकन करते हुए वह अपनी रचना को बुनना शुरु करता है। पात्रों के मनोविज्ञान को समझना,उनकी संवेदनाओं को टटोलना और सम्पूर्ण दृश्यावलियों के बीच से कहानी को ढूँढ निकालना,कहानीकार यही तो करता है। उसकी हमदर्दी पात्रों के साथ होती है,बल्कि वह उनका जीवन स्वयं जीता है और समाज की सम्पूर्ण विसंगतियों को चित्रित करता है। समाज और व्यक्ति के बीच के संघर्ष को रेखांकित करता है और मानवीय जटिलताओं को खोल कर रख देता है।

अंत में इतना ही कहना चाहूँगा,हर लेखन के केन्द्र में मनुष्य है,उसकी भावनाएं, संवेदनाएं,संघर्ष और उसका सृजन है। प्रकृति के साथ रचा-बसा उसका मन सुख-शान्ति का वातावरण बनाता है और जीवन सफल करता है। सारा विस्तार मनोवैज्ञानिकता लिए हुए है तथा टकराव व जुड़ाव के पीछे हमारे मन-बुद्धि का चिन्तन है। कहानी और इन कहानी संग्रहों को लेकर मेरी विवेचना किंचित भी पाठकों को सहयोग कर सकी तो मेरा श्रम सार्थक हो जायेगा। मेरा कोई बड़ा दावा नहीं है,मैं स्वयं पाठक की तरह समझना चाहता हूँ और अपने अनुभवों को बाँटना चाहता हूँ।

समकालीन कहानियों पर सार्थक अभिव्यक्ति

डॉ दीपक पाण्डेय

मनुष्य का संगीत, कला और साहित्य से अभिन्न रिश्ता होता है। सामाजिक प्राणी होने के नाते मानव-जीवन अपने आसपास की परिस्थितियों और वातावरण से किसी न किसी रूप में संबद्ध होता है , यही संबद्धता उसे अपने मनोभावों को अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित करती हैं। यही प्रेरणा साहित्य-सृजन का आधार बनती है । आज विश्व की अनेक भाषाओं में समृद्ध साहित्य उपलब्ध है और इसकी श्रीवृद्धि में अनेक विधायें महत्वपूर्ण हैं जिनमें से कुछ के नाम हैं- कविता, कहानी, उपन्यास, एकांकी , नाटक, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत आदि ।

इन साहित्यिक विधाओं में कहानी लोकप्रिय विधा मानी जाती है क्योंकि माना जाता है मनुष्य के जन्म के साथ ही कहानी का जन्म हुआ होगा । श्रुति परंपरा से प्रारंभ हुई कहानी की यात्रा वर्तमान में समृद्ध साहित्यिक विधा के रूप में उपलब्ध है । वैश्विक सृजनात्मक साहित्य की परिधि में हम पातें हैं कि विश्व में प्रचलित लगभग सभी भाषाओं में कहानी साहित्य उपलब्ध है। आप हिंदी कहानी साहित्य के समृद्ध इतिहास से भलिभांति परिचित हैं और आधुनिक काल के कहानी-साहित्य पर विचार करें तो हम पाते हैं कि अनेक साहित्यिक विभूतियों ने इस परंपरा को संवर्धित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है । आधुनिक काल की प्रारंभिक कहानियों जैसे - शिवप्रसाद सितारेहिंद की 'राजा भोज का सपना', किशोरीदास बाजपेयी की 'इंदुमती', बंगमहिला की 'दुलाईवाली' , माधवराव सप्रे की 'एक टोकरी भर मिट्टी', रामचंद्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय' आदि से कहानी लेखन की जो परंपरा प्रारंभ हुई वह निरंतर नए-नए सोपानों को पार करते हुए समृद्ध होती गई और आज भी गतिमान है। हिंदी कहानी साहित्य की समृद्धि में प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, सुदर्शन,यशपाल, अज्ञेय, जैनेंद्र, इलाचंद जोशी, मोहन राकेश ,राजेन्द्र यादव ,कमलेश्वर, अमरकांत,धर्मवीर भारती , ज्ञानरंजन, मन्नू भंडारी, चित्रा मुद्गल, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, राजी सेठ जैसे हजारों साहित्यकारों की रचनाधर्मिता से हिंदी समाज परिचित है ।

'समकालीन कहानियाँ : समीक्षा के दायरे में' वरिष्ठ साहित्यकार और समीक्षक श्री विजय कुमार तिवारी जी की नवीनतम पुस्तक है। अल्पकाल में ही तिवारी जी ने साहित्यिक समीक्षा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बना ली है । लगातार वे साहित्यिक रचनाओं की समीक्षा लेखन में सृजनरत हैं और सुयोग बन रहा है कि देश-विदेश के साहित्यिक सरोकार से संबद्ध पत्र-पत्रिकाओं में उनकी समीक्षाएं प्रकाशित हो रही हैं। इस पुस्तक में उन्नीस कहानी संग्रहों की समीक्षाएँ संकलित हैं जो किसी न किसी पत्रिका में पूर्व में प्रकाशित हो चुकी हैं। कहानी विधा की समीक्षाओं को पुस्तकाकार कलेवर में प्रस्तुति लेखक के सृजनशीलता को जीवंतता प्रदान करती है। विजय कुमार तिवारी जी ने कहानी संग्रहों - ('पीले हाफ पेंट वाली लड़की'-अरुण अर्णव खरे,'छुअन तथा अन्य कहानियाँ'-विवेक निझावन,'यत्र तत्र सर्वत्र'- संजीव जयसवाल , 'दूर नीड़ के पक्षी'- जय प्रकाश पांडे, 'आवाजों के आर-पार'-श्रीविलास सिंह ,'प्रवासी प्रतिनिधि कहानियाँ'- संपादक डॉ दीपक एवं डॉ नूतन पाण्डेय, 'भूर..... भू.....स्वाहा'- शिव कुमार यादव ,'काश! पंडोरी न होती '-मृदुला श्रीवास्तव , 'काले मेघा'-श्री प्रकाश मिश्र, 'भ्रांती'- डॉ भोला शंकर मिश्र, 'सन्नाटे का शोर'-श्रीविलास सिंह ,'बसेसर की लाठी'-माला वर्मा,'छोटी सी सीढ़ी'-नरसिंह नारायण, 'रिश्तों की कड़वाहट'-डॉ प्रदीप उपाध्याय,'उसका फैसला'-निर्मल सिंह, 'यात्रीगण कृपया ध्यान दें' एवं 'मन बोहेमियन'- राम नगीना मौर्य, 'धुस-कुटुस'-प्रबोध कुमार गोविल ,'गुलाबड़ी'-पंकज त्रिवेदी) की एक-एक कहानी का गंभीरता से विश्लेषण किया है । उन्होंने जहाँ कहानी के तत्वों के आधार पर समीक्षा की है वहीं कहानी लेखकों की भाव-प्रवणता और अभिव्यक्ति पर अपनी सार्थक टिप्पणियाँ की हैं। जिन कहानीकारों की रचनाओं पर लिखा गया है वे सभी

वर्तमान समय सृजनशील हैं और हिंदी-कहानी में अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं । सभी कहानीकारों के अपने-अपने विषय हैं, कहन की शैली है पर सभी 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना को आत्मसात कर अंतस की भावनाओं को कथा के माध्यम से पाठकों तक पहुंचाने का उपक्रम कर रहे हैं । विजय कुमार तिवारी जी की पैनी समीक्षक दृष्टि कहानियों के भावबोध तक पाठकों की पहुँच सुगम बना देती है और उसके उपकरण बनते हैं सधी कसावट युक्त लेखनी एवं प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति कौशल ।

'समकालीन कहानी का रचना विधान' नामक ग्रंथ में डॉ गंगा प्रसाद विमल ने सन
1960 के बाद की कहानी के रचना
विधान,समीक्षा,अकहानी एवं उसके बहाने उस दौर की कहानी के केंद्र में मौजूद जीवन के समग्र अस्वीकार तथा विद्रोह की मुख्य चेतना पर विचार करते हुए लि खा है -' वे सब रचनाकार जो कम-से-कम रोमांटिक भाव-बोध से तथा परम्परागत स्थिति से अलग हैं और कथा रचना में अपने समग्र नयेपन का आग्रह है समकालीन रचना के रचनाकार हैं ।' समकालीन कहानीकारों ने वर्तमान जीवनानुभवों को विविध दृष्टिकोणों से विश्लेषित कर अपने भावबोध में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है ।

समकालीन कहानी में वर्तमान में मनुष्य के वैविध्य संसार का चित्रण हैं । यही सब 'समकालीन कहानियाँ : समीक्षा के दायरे में' पुस्तक में समाहित है ।

इस संग्रह में शामिल सभी कहानीकारों को उनकी सृजनात्मक ऊर्जा के लिए हार्दिक बधाई और विजय कुमार तिवारी जी को विशेष साधुवाद जिन्होंने प्रतिभासम्पन्न समकालीन रचनाकारों की कहानियों के भावबोध को हिंदी-पाठकों को सुलभ कराने का स्तुत्य प्रयास किया है । निश्चित ही यह पुस्तक समकालीन साहित्य के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी साबित होगी । राइजिंग स्टार्स प्रकाशन,दिल्ली के श्री प्रेमपाल सिंह को पुस्तक प्रकाशन का दायित्व स्वीकारने के लिए हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं ।

सहायक निदेशक
केंद्रीय हिंदी निदेशालय,
शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार
नई दिल्ली, भारत
ई-मेल –dkp410@gmail~com

विस्तृत आकाश की अभिव्यक्ति : आज की कविता

डॉ दीपक पाण्डेय

साहित्य में मानव जीवन से संबद्ध सभी क्षेत्र-परिक्षेत्र किसी न किसी रूप में अभिव्यक्ति पाते हैं और इस अभिव्यक्ति के लिए अनेक संवेदनात्मक विधाओं का सृजन हुआ है। इन्हीं विधाओं में काव्य भी एक है। भारतीय साहित्य में काव्य विषय पर गंभीर चिंतन परंपरा रही है।

आचार्य विश्वनाथ ने कहा है कि,'क्ष39;वाक्यम् रसात्मकं काव्यर्मक्ष39; यानि रस की अनुभूति करा देने वाली वाणी काव्य है। कविता वह साधन है जिसके द्वारा सृष्टि के साथ मनुष्य के रागात्मक संबंध की रक्षा और निर्वाह होता है। समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने वाली कविता ही वास्तविक कविता होती है,यही उसका सौंदर्य है।

जब हम हिंदी साहित्य में काव्य-विधा के ऐतिहासिक परिदृश्य को देखते हैं तो पाते हैं कि हिंदी कविता सबसे समृद्ध विधा के रूप में हमारे सामने आती है । हिंदी कविता का कोष दिनोंदिन भरता जा रहा है इस अक्षय भंडार में अनेक काव्य-रचनाकारों की विशेष भूमिका रही है। हिंदी कविता आदिकालीन प्रवृत्तियों और परंपराओं से आगे बढ़ते हुए, भक्तिकाल की सगुण एवं निर्गुण धाराओं में प्रवाहित होते हुए, रीतिकालीन विशेषताओं को अपनाते हुए, आधुनिक काल के विविध प्रसंगों को आत्मसात करते हुए गत्यमान बनी हुई है। आज कविता के क्षेत्र में अनेक रचनाकार सृजनशील हैं और आज उनकी रचनाएँ हिंदी-संसार में अपनी पहचान बना रही हैं ।

'समीक्षा के दायरे में आज की कविता' पुस्तक वर्तमान में हिंदी कविता की दिशा और दशा को सार्थक अभिव्यक्ति देने में सफल होती है क्योंकि श्री विजय कुमार तिवारी जी ने हाल ही में प्रकाशित काव्य संग्रहों पर गंभीरता से चिंतन-मनन किया है। इस तरह आज हिंदी कविता को समृद्ध कर रहे देश के विविध शहरों के रचनाकारों के काव्य-संग्रहों में अभिव्यक्त भावबोध को समीक्षात्मक रूप में पाठकों के समक्ष रखने का स्तुत्य कार्य किया है। स्तुत्य इसलिए क्योंकि जिन रचनाकारों की काव्य पुस्तकों को इसमें शामिल किया है वे वर्तमान समय में अपनी रचनाधर्मिता से हिंदी-संसार में विशेष मुकाम बनाने के लिए पाठकों के सामने आ रहे हैं। इस पुस्तक में लेखक ने जिन कवियों की रचनाओं को समीक्षा की कसौटी पर कसा है उनमें श्रीप्रकाश मिश्र,विनोददास, पंकज त्रिवेदी, भावना भट्ट, प्रेम रंजन अनिमेष, पारमिता षडंगी , कुमार बिंदु, भानु प्रकाश रघुवंशी, हर गोविन्द पुरी, अमित कुमार मल्ल , डॉ प्रतिभा सिंह, डॉ विनय कुमार महारना, कुमार अनिल, कश्मीरा सिंह, कर्नल वशिष्ट, श्री केशव मोहन पाण्डेय, डॉ उषा किरण, एम के मधु और मॉरीशस की साहित्यकार कल्पना लालजी शामिल हैं । 'समीक्षा के दायरे में आज की कविता'पुस्तक में शामिल सभी सृजनशील रचनाकारों के संबंध में श्री विजय कुमार तिवारी जी ने स्वीकार किया है कि-' जिन काव्य संग्रहों को पढ़ने,समझाने और विवेचनात्मक चिंतन करने का सुखद संयोग बना उनके रचनाकार/कवि वरिष्ठ भी हैं और युवा भी । सुखद यह है कि प्रायः सभी की कविताओं में भाव,भावना के साथ हमारे ऐतिहासिक ,प्राचीन सभ्यता-संस्कृति के तत्व मिलते हैं।'

आज की कविताओं का स्वर जन-पक्षधर है और समाज में व्यक्ति के जीवन को उसकी सम्पूर्णता में स्वीकार करने और उसके जीवन की समस्याओं को गहरे भावबोध के साथ स्पष्ट अभिव्यक्त करना उनकी प्रमुख पहचान रही है । अपने समय एवं समाज से संघर्ष करना और फिर उस पर प्रश्न खड़े करना आज की कविता के जन-जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को अभिव्यंजित करता है । इस काल की कविताओं का भावबोध समाज से नकारात्मकता के बादलों को हटाकर सकारात्मकता का संचार करने का प्रयास है।

समय के साथ स्थितियाँ-परिस्थितियाँ परिवर्तित होती हैं, ज्ञान-विज्ञान के नए-नए चमत्कार मानव -समाज को जहाँ अचंभित करते हैं वहीं उन्हें अपने से गहरे जुड़ने को बाध्य कर देते हैं। मानव- जीवन नित नए प्रयोगों-अनुप्रयोगों से एक-दो-तीन होता है। इस पुस्तक में संकलित काव्य संग्रहों की समीक्षाओं से यह बात स्पष्ट होती है कि कवि-हृदय जीवन के सभी घटाटोपों से अनुभवों को ग्रहण कर अपनी कल्पनाशीलता, अभिव्यक्ति कौशल से उन अनुभवों को समाज को सौंपता है । कुछ समय पूर्व कोरोना की जो वैश्विक विभीषिका की परिस्थितियां बनीं, प्राकृतिक विपदाओं की स्थितियां हों, विज्ञान के अविष्कारों का समाज पर प्रभाव हो, भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण हो आदि सभी विषयों पर आज के कवियों ने अपनी लेखनी चलाई है और समाज की संवेदनाओं को अभिव्यक्ति दी है। समाज में परिवर्तित हो रहे मानव मूल्यों के प्रति कवियों का विशेष ध्यान जाता है और अपने अभिव्यक्ति कौशल से समाज के उत्थान की प्रेरणा को वाणी दे रहे हैं और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना को पोषित करने का उपक्रम कर रहे हैं। इस पुस्तक में केशव मोहन पाण्डेय के कविता संग्रह 'सपने रोज बुनता हूँ' पर विस्तृत समीक्षात्मक लेख भी संकलित है और लेखक ने कविता संग्रह की भूमिका से वरिष्ठ साहित्यकार श्री अशोक लव जी कविता के बारे में उनके विचारों को उद्धृत किया है जिससे सभी सहमत भी होंगे कि -

''वास्तव में कविता संवेदनशील हृदय की भावनाओं की अभिव्यक्ति है। हृदय के सूक्ष्मतम भावों की,कोमल अनुभूतियों की,वेदनाओं की और आनंद आदि की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति कविता में ही होती है। अलंकृत भाषा, कोमलकांत पदावली, प्रतीक, बिंब, छन्द आदि के कारण कविता का सहृदय पाठक पर अन्य विधाओं की अपेक्षा अधिक प्रभाव पड़ता है। कविता का रसास्वादन अद्भुत होता है। आदि कवि बाल्मीकि से लेकर समकालीन कवियों तक की कविता-यात्रा अद्भुत है।''

श्री विजय कुमार तिवारी जी ने बहुत ही गंभीरता से उपलब्ध कविता-संग्रहों का अध्ययन किया है और विस्तार से उनपर गहन चिंतन-मनन किया है । उन्होंने उन पुस्तकों पर अपने विचारों को पूर्ण स्वतंत्रता के साथ निष्पक्ष भाव से अपने समीक्षात्मक आलेखों में समाहित भी किया है । सभी लेखों में तिवारी जी का भाषा-सौष्ठव अद्भुत है और नवलेखकों का मार्ग प्रशस्त करने का सामर्थ्य से परिपूर्ण है।

मेरा सौभाग्य रहा कि मुझे तिवारी जी के धीर-गंभीर,आध्यात्मिक व्यक्तित्व से परिचित होने का अवसर मिला । साहित्य के प्रति तिवारी जी का यह समर्पण है कि सेवानिवृत्ति काल में वे निरंतर नई रचनाओं को सिर्फ पढ़ ही नहीं रहे हैं वरन उन रचनाओं पर शोधपरक टिप्पणियाँ भी हिंदी-जगत को उपलब्ध करा रहे हैं । जिस दक्षता के साथ तिवारी जी समीक्षा के क्षेत्र अपने लेखन को समर्पित कर रहे हैं , निश्चित ही भविष्य में वे प्रतिष्ठित समीक्षक के रूप में पहचाने जायेंगे। आज देश-विदेश की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में आपकी समीक्षाएँ प्रकाशित हो रही हैं और सराही जा रही हैं । परिणामतः लेखक,प्रकाशक, संपादक आपसे लेखकीय सहयोग की अपेक्षा रखने लगे हैं। मैं माँ सरस्वती से प्रार्थना है कि वे श्री विजय तिवारी जी पर अपनी कृपादृष्टि बनाए रखें और उन्हें लेखन के लिए नई ऊर्जा प्रदान करती रहें।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'समीक्षा के दायरे में आज की कविता' पुस्तक हिंदी कविता के क्षेत्र में उपयोगी साबित होगी और नए रचनाकारों को प्रतिस्थापित करने में महत्वपूर्ण साबित होगी।

पुस्तक का नाम : 'समीक्षा के दायरे में आज की कविता
लेखक : विजय कुमार तिवारी
प्रकाशक : सर्वभाषा ट्रस्ट प्रकाशन , नई दिल्ली

सहायक निदेशक
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार
नई दिल्ली 110066
ईमेल - dkp410@gmail~com

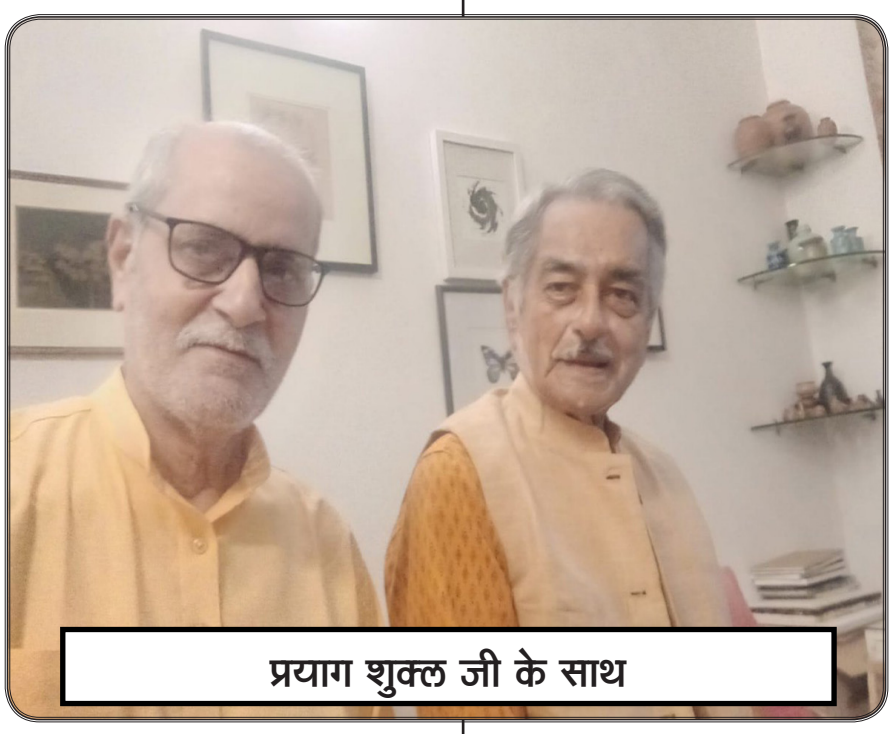

प्रयाग शुक्ल जी के साथ

प्रबोध कुमार गोविल जी के साथ